इसरो isro

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अक्ष

वीकेसी (आईआईएसयू/सीएमएसई) की अर्धवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका

अंक सं. 11, अक्तूबर, 2021 - मार्च, 2022

संरक्षक

डॉ. डी साम दयाल देव

निदेशक, आईआईएसयू

मुख्य संपादक

राजीव सिन्हा

संपादक मंडल

संजय कुमार सिंह

प्रियदर्शन

उल्लास जोस

लक्ष्मी जी

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो।

वी के सी (आईआईएसयू/सीएमएसई)

वट्टियूरकाव,

तिरुवनंतपुरम - 695 013

दूरभाष - 0471 2569129

संपादकीय

प्रिय मित्रों,

कोविड-19 का भयावह कहर अब धीरे-धीरे शांत हो रहा है व जन-जीवन वापस अपनी पटरी पर आकर सामान्य होने की दिशा में अग्रसर हो रहा है। ऐसे में आपको "अक्ष" का नया नवेला अंक प्रस्तुत करने की मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हर बार की तरह हमने इस बार भी सम-सामायिक एवं प्रासंगिक लेखन से इसे संजोने की भरपूर चेष्टा की है। कोविड महामारी से होनेवाले अहसास का वर्णन, जीवन में वनस्पति जगत का महत्व, गणतंत्र का सही मायनों में अर्थ, जीवन मूल्यों पर आधारित संगति पर लेखों ने इस अंक की शोभा बढ़ाई है। वहीं मधुर एवं दिल को छू लेने वाली "युद्ध की विभीषिका" और नारी के सम्मान पर आधारित कविताओं ने चार चांद लगा दिए हैं। तकनीकी लेख और ऑनलाइन शिक्षा, इसे एक अलग सा आयाम देते हैं। वही पीएसएलवी सी-52 अभियान पर रिपोर्ट हमें अंतरिक्ष कार्यक्रम का ज्ञान देते हैं।

आप लोगों द्वारा दी हुई प्रतिक्रियाएँ व आपके अमूल्य विचारों का हार्दिक स्वागत है क्योंकि आपका मार्गदर्शन ही हमें अक्ष के हर आगामी अंक को पहले से बेहतर, पठनीय व उत्कृष्ट बनाने में सहयोग करता है। इन्हीं विचारों के साथ मैं आपको "अक्ष" का ये नया अंक समर्पित करता हूँ।

राजीव सिन्हा

पन्ने पलटते पर...

04 हाल ही के अभियान
05 युद्ध थम जाएगा
06 अहसास
08 बच्चों के लिए ऑन-लाइन शिक्षा - गुण तथा अवगुण
10 अतीत के झरोखे से
11 कोरोना से पहले एवं कोरोना के बाद
15 वह जो युद्ध की ढाल पहनी थी
16 नई सुबह - नई शुरूआत
19 एक नारी
20 गणतंत्र क्या होता है ?
22 एकल अक्षीय परिवीक्षण यंत्रावली
24 भाव एक अनुभव
25 टिप्पणियाँ
26 अंतरिक्ष शब्दावली
27 प्रशासनिक शब्दावली
28 सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी
29 यादगार होली - और बर्फ पिघल गई
33 सुर-सम्राज्ञी लता मंगेशकर
36 फूल पत्ती
38 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022- आउटडोर गतिविधि
40 कथक के पुरोधा - बिरजू महाराज
43 चुटकुले
44 वी के सी की हिंदी गतिविधियाँ
48 उपलब्धियाँ
50 पाठकों की ओर से

हाल ही के अभियान

पीएसएलवी-सी52 ने श्रीहरिकोटा से ईओएएस-04 एवं दो सह-यात्री उपग्रहों का सफलतापूर्वक प्रमोचन किया। 14, फ़रवरी 2022 को भारतीय समयानुसार 05:59 बजे सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, शार, श्रीहरिकोटा के प्रथम प्रमोचन मंच से भारत के ध्रुवीय उपग्रह प्रमोचन यान पीएसएलवी-सी 52 ने सफलतापूर्वक उड़ान भरी एवं लगभग 18 मिनट बाद अर्थात् 06:17 बजे 529 कि.मी. तुंगता की एक निश्चित सूर्य-तुल्यकाली ध्रुवीय कक्षा में भू-प्रेक्षण उपग्रह ईओएस-04 को अंतःक्षेपित किया। एसडीएससी शार, श्रीहरिकोटा से यह 80वां प्रमोचन यान अभियान था। यह पीएसएलवी की 54वीं उड़ान और एक्स एल (XL) विन्यास (6 स्ट्रैप-ऑन मोटर) में पीएसएलवी की 23 वीं उड़ान थी। ईओएस-04 का विकास एवं निर्माण यूआर राव उपग्रह केंद्र, बैंगलुरू में किया गया। यह एक रेडार बिंबन उपग्रह है, जिसकी अभिकल्पना, मौसम की सभी स्थितियों में, कृषि, वानिकी और वृक्षारोपण, मिट्टी की नमी एवं जल विज्ञान और बाढ़ मानचित्रण जैसे अनुप्रयोगों के लिए उच्च गुणता वाली छवियां प्रदान करने हेतु की गई है। लगभग 1710 कि.ग्रा. भार का यह उपग्रह 2280 वॉट ऊर्जा उत्पन्न करता है और इसकी अभियान आयु 10 वर्ष है। इस प्रमोचन यान ने दो और छोटे उपग्रहों को कक्षा में रखा जिनमें कोलेराडो विश्वविद्यालय, बोल्डर की वायुमंडलीय और अंतरिक्ष भौतिकी प्रयोगशाला के सहयोग से भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (IIST) का एक छात्र उपग्रह इंस्पायरसैट-1 (INSPIREsat-1) और इसरो से एक प्रौद्योगिकी प्रदर्शक उपग्रह (आईएनएस-2टीडी) शामिल हैं। सह-यात्री उपग्रहों को पूर्व निर्धारित अनुक्रम में पीएसएलवी से सफलतापूर्वक पृथक किया गया।

ओम प्रकाश
श्री प्रेम प्रकाश, वरि.तकनीकी
सहायक-ए, आरक्यूए का भाई

युद्ध थम जाएगा

सबको झूठा आश्वासन देकर जब वो युद्ध को चला होगा,
हाथों को चूम नन्हीं परी की, घूंट लहू उसने भी पिया होगा।
माँ फफक फफक कर रोएगी, पिता देशधर्म समझाएगा,
वहीं घर के चौखट पर पत्नी, राह धरे सिसकाएगी।
पर जो कफन बांध कर निकला है, वो कहां लौट कर आएगा?
युद्ध ही तो है, कुछ दिनों में ये युद्ध भी थम जाएगा।

आज खेल रहे जहां ये खून की होली,
कल यहीं पर अमन की दिवाली मनाई जाएगी।
आज जहां गोलों बारूदों का भयावह मंज़र है,
कल यहीं पर निर्जीव कागज़ों पर समझौता करवाया जाएगा।
ये तुच्छ वैश्विक संगठनों का जमावड़ा अंततः आगे आएगा।
युद्ध ही तो है, कुछ दिनों में ये युद्ध भी थम जाएगा।

मानव विध्वंस का ये मलबा कल कुछ लोग हटाने आएंगे।
उजड़ी बस्तियों, टूटे आशियानों को कुछ लोग सजाने आएंगे।
फिर से इतिहास के पन्नों पर कुछ झूठे महान उकेरे जाएंगे,
सब कुछ होगा पहले जैसा, एक नया दौर भी आएगा।
पर क्या इन झूठे वादों से वही पुराना देश बन पाएगा।
युद्ध ही तो है, कुछ दिनों में ये युद्ध भी थम जाएगा।

*

अहसास

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी

राहुल के छात्रावास में आज अजीब तरह की हलचल मची हुई थी। अगले दिन जनता कर्फ्यू की घोषणा हुई थी। इस कर्फ्यू का उद्देश्य कोरोनावायरस के बढ़ते प्रसार को रोकने के लिए बताया गया था। छात्रावास में चर्चा हो रही थी कि जल्दी ही व्यापक लॉकडाउन भी लगनेवाला है। सारे छात्र विमर्श में लगे थे कि छात्रावास में रुकना उचित होगा या अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान किया जाना उचित होगा। ज़्यादातार छात्रों ने घर जाना ही पसंद किया। राहुल ने भी यही निर्णय कर दो दिन के बाद के ट्रेन की टिकट बुक करा ली।

राहुल के पिता छोटी-मोटी दुकान चलाते थे। राहुल बचपन से ही पढ़ाई में होशियार था। अत: पिताजी ने हमेशा ही पढ़ाई की ओर प्रेरित किया और अपने पास-पड़ोस के अन्य बच्चों से मिलना-जुलना कम ही रखने का निर्देश दिया हुआ था। अपने कस्बे के हाईस्कूल से राहुल ने अच्छे अंकों से दसवीं एवं बारहवीं की परीक्षा पास की। साथ-ही-साथ वह जीतोड़ मेहनत करता रहा और आईआईटी की परीक्षा दी। इस परीक्षा में पहले ही प्रयास में उसे अच्छा रैंक मिला और आईआईटी दिल्ली में उसको दाखिला मिल गया। यहां दो साल कैसे गुज़र गए पता ही नहीं चला।

ट्रेन की ऊपरी बर्थ पर राहुल औंधे मुँह लेटा पड़ा था कि साथ के यात्री ने आवाज़ लगाई कि तुम्हारा स्टेशन आ गया। यह सह-यात्री विदेश में मेडिसिन की पढ़ाई कर रहा था तथा वह भी कोरोना के कारण ही वापस घर आ रहा था। राहुल झट-पट ट्रेन से उतरा और घर चला गया। घर पर सबको देख कर वह बहुत खुश हुआ परंतु कहीं-न-कहीं उसके मन में यह ख्याल आ रहा था कि पता नहीं कितने दिन यहां इस कस्बे में रहना पड़ेगा। यहां पास-पड़ोस में उसका कोई दोस्त भी नहीं था और दोस्ती हो भी तो किससे, बचपन से ही उसके अंदर यह भावना घर कर गई थी कि छोटी जगह में लोग अच्छे नहीं होते, पढ़ाई-लिखाई नहीं करते और व्यर्थ के कामों में समय नष्ट करते रहते हैं।

दो दिन बाद सुबह उठते ही राहुल को सिर में थोड़ा दर्द एवं गले में खराश जैसे लक्षण दिखाई दिए। थोड़ा बुखार भी था। उसका मन सशंकित हो उठा कि कहीं यह कोरोना वायरस ही तो नहीं है। उसने सोचा कि एक दिन देखते हैं, हो

सकता है यह सामान्य सर्दी-बुखार हो। परंतु अगले दिन भी उसे हल्का बुखार था और उसके माता-पिता को भी ऐसे ही लक्षण आ गए। अब वह सोच में पड़ गया। नज़दीकी स्वास्थ्य केंद्र भी यहाँ से सात-आठ किलो मीटर दूर था। किसी तरह इसकी भनक मुन्ना, जो उसका पड़ोसी था, तक पहुंची। वैसे भी, लोग थोड़ा सशंकित भी थे कि वह बाहर से आया है कहीं बीमारी लेकर न आया हो।

खैर, देश में संपूर्ण लॉकडाउन लग चुका था। पड़ोसी मुन्ना और उसके दो दोस्तों ने पहले तो कुछ खाना-पीना राहुल के परिवार के लिए जुटाया और उसके बाद वे दो साइकिल रिक्शा भी लेकर आए। दो रिक्शों पर उन तीनों को बिठाकर मुन्ना एवं उसके साथी उन्हें स्वास्थ्य केंद्र लेकर गए। वहाँ पर शुरूआती जाँच के बाद जिला अस्पताल के कर्मी उनकी जाँच करने आए। जाँच के लिए उनके नमूने लिए गए और दो दिन के बाद जिला अस्पताल से रिपोर्ट आई कि वे तीनों कोविड-19 से संक्रमित हैं। मुन्ना एवं उसके साथी निरंतर सारा प्रबंधन देखने में लगे हुए थे तथा उनके लिए खाने-पीने का सामान, दवाइयाँ इत्यादि सभी आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बदस्तूर किए जा रहे थे। दस दिनों बाद तीनों ठीक भी हो गए और आगे के पृथकवास के लिए घर लाए गए। राहुल मुन्ना एवं उसके साथियों के प्रति हृदय से कृतज्ञ था। उसी समय राहुल को यह भी पता चला कि मुन्ना के एक साथी को, जो कि उनकी देखभाल में लगा हुआ था, भी कोविड हो गया है। उसे यह भी पता चला कि दवाइयों तथा भोजन सामग्री जुटाने के लिए मुन्ना एवं उसके साथियों ने चंदा इकठ्ठा कर धन जुटाया था। राहुल उन लोगों को ये पैसे वापस करना चाहता था तो वे लोग मना कर रहे थे, परंतु राहुल के पिता के कहने पर उन्होंने पैसा लेना स्वीकार किया।

धीरे-धीरे राहुल मुन्ना एवं उसके साथियों के थोड़ा नज़दीक आया और उनकी पृष्ठभूमि के बारे में अवगत हुआ। उसे यह जानकर भी आश्चर्य हुआ कि अंदर-ही-अंदर कहीं-न-कहीं उन सबों में पढ़ाई-लिखाई के प्रति रुचि तथा सम्मान था, परंतु प्रायः अपनी आर्थिक पृष्ठभूमि से लाचार होकर उन लोगों ने पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी। लेकिन राहुल ने महसूस किया कि दिल से ये लोग उत्तम कोटि के हैं। राहुल ने अब ठान लिया कि अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करके वह अपने कस्बे में वापस आकर कुछ ऐसा करेगा कि आगे कोई मुन्ना जैसा व्यक्ति सिर्फ अर्थाभाव के कारण पढ़ाई से वंचित न रहे तथा उसने यह भी ठान लिया कि वह इसी कस्बे के आस-पास स्थल की तलाश कर कोई ऐसा व्यवसाय शुरू करेगा, जिससे यहां के युवकों के लिए रोज़गार के अवसर भी सृजित हों।

वाकई राहुल को यह अहसास हो गया था कि उसकी सोच गलत थी और आगे से वह बिना पूरी जानकारी के किसी भी व्यक्ति या स्थान के बारे में पूर्वाग्रह नहीं पालेगा। इस लॉकडाउन के कारण उसे जो निराशा हो रही थी, उसने राहुल को जीवन का एक अमूल्य पाठ पढ़ा दिया। *

अर्चना वासुदेवन
वरि.सहायक, आईआईएसयू लेखा

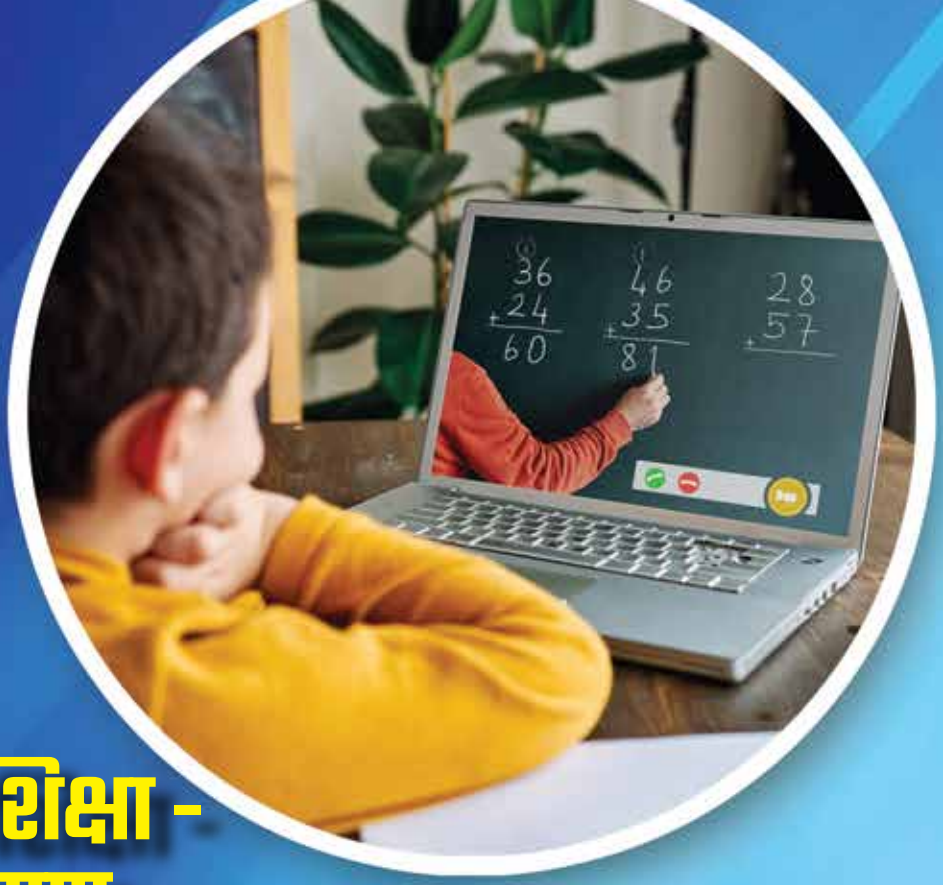

बच्चों के लिए ऑन-लाइन शिक्षा - गुण तथा अवगुण

स्कूल और स्कूल में पढ़ाई, हर व्यक्ति के जीवन से इस तरह से जुड़े हैं कि कोई सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा एक दिन आएगा जब हम स्कूल न जाकर भी अपनी पढ़ाई कर सकते हैं। वर्ष 2019 के अंत से महामारी कोविड-19 ने दुनिया को इस तरह से अपने कब्ज़े में ले लिया कि बच्चों को स्कूल जाना तो दूर, लोगों को अपने दैनिक जीवन के लिए भी मुश्किल झेलना पड़ा।

लेकिन कितना समय हम मनुष्य इस मुश्किल से छुप कर बैठ सकते हैं? हमें अपनी परिस्थितियों से लड़कर और समझौता करके ही आगे बढ़ना है। इसलिए तो ही हम मनुष्य कहलाते हैं।

यह बहुत ही प्रशंसनीय बात है कि मनुष्य के स्वास्थ्य के संरक्षण के साथ ही साथ बच्चों की पढ़ाई के प्रबंधन के लिए भी तरीके ढूंढे जाने लगे और बिना कोई विलंब के हम वर्ष 2020-2021 की पढ़ाई को लेकर आगे बढ़े। और, इसके लिए हमें जो तरकीब मिली वह है 'ऑन-लाइन शिक्षा'। शुक्र है आज के बच्चे डिजिटल उपकरणों से इतने वाकिफ हैं कि ऑन-लाइन शिक्षा उनके लिए बहुत भारी नहीं पड़ी और वे उसमें व्यस्त भी हो गए हैं। अब यह सोचना है कि क्या हम हमेशा इन तरीकों पर ही निर्भर रहें या नहीं। इस अवसर पर हम आन-लाइन शिक्षा के गुण तथा अवगुण के बारे में ज़्यादा सोचते हैं।

गुण से ही शुरू करें।

महामारी जैसी अवस्था में जब बच्चों को, जो सुरक्षा निर्देशों का पालन करना नहीं जानते या नहीं करते, हम बाहर नहीं भेज सकते, ऑन-लाइन शिक्षा एक अनुग्रह है। अपने घर के आराम, सुविधा और सुरक्षा में बैठकर ही पढ़ाई कर सकते हैं। बच्चे आधुनिक डिजिटल उपकरणों से वाकिफ होंगे। तरह-तरह के ऑन-लाइन मीटिंग मोड उनके लिए खेल जैसे ही हैं। बच्चे जो वाकई पढ़ाई में उत्सुक हैं उनके लिए पढ़ाई में आत्मनिर्भर होने का अच्छा अवसर है। कुछ बच्चे जो स्कूल से और अध्यापकों से डरते हैं उनके लिए यह तरीका फायदेमंद है। समय की बचत गुणों में से एक है। क्लास को रेकोर्ड करने की सुविधा होने

के कारण क्लास मिस (छूटने) करने का डर नहीं। अध्यापकों के लिए तो इस माध्यम से पढ़ाते वक्त अगर कुछ अधिक जानकारी देनी हो तो उसी क्षण गूगल करके दे सकते हैं। यह भी सुनने में आया है कि कुछ बच्चे जो इनएक्टिव और पढ़ाई में पीछे रहते थे वे ऑन-लाइन के माध्यम से होनेवाली शिक्षा में बहुत ही आगे आ गए हैं।

अब अवगुण

देश कितना भी विकास करे, सभी लोगों को उसका फायदा नहीं मिलता। बहुत सारे बच्चे हमारे देश में है जो दो वक्त के खाने के लिए स्कूल जाते थे और उसके साथ पढ़ाई होती है तो अच्छी बात है। केरल जैसे राज्य में तो बच्चों के लिए जो अनाज है उसे उनके घर पहुँचाने का प्रबंध किया जाता है। लेकिन भारत के हर राज्य में ऐसा करते हैं या नहीं इसका तो पता नहीं। जब ऐसे बहुत सारे बच्चे हैं जिनके पास खाने को नहीं तो उनके पास डिजिटल उपकरण कैसे होंगे ताकि वे ऑन-लाइन शिक्षा पा सकें। ऑन-लाइन शिक्षा हर बच्चे तक नहीं पहुंचती।

हम विद्यालय सिर्फ पढ़ने के लिए ही नहीं बल्कि आपस में मिलजुलकर रहना सीखने के लिए भी जाते हैं। विद्यालय का जो उत्सुक वातावरण है वह ऑन-लाइन शिक्षा में नहीं मिलता। एक कक्षा के ही बच्चे आपस में एक-दूसरे को नहीं जानते। साथ पढ़ने पर जो गुण प्राप्त होंगे, जैसे आपस में प्यार, क्षमा, मदद करना आदि, बच्चे सीखते ही नहीं। दूसरों के बारे में या दूसरों के प्रति कोई भावना नहीं पैदा कर सकते।

स्कूल में जो दिवस/पखवाड़ा/समारोह/त्योहार आदि मनाने का मज़ा है वह ऑन-लाइन शिक्षा में नहीं मिलता। स्कूल जाने के लिए हर घर में सुबह कुछ तैयारियाँ होती थीं, कुछ टाइम-टेबल होता था, जैसे सुबह उठना, नहाना-धोना, नाश्ता करना, तैयार होना, समय पर जाना इत्यादि।लेकिन कुछ घरों में तो यह सब पलट गया है। बच्चेक्लास के वक्त पर उठते हैं, गैड्जेट को ऑन करके भीरखते हैं। बच्चे हाज़िरी तो देते हैं लेकिन क्लास की बातें सुनते हैं या नहीं यह बच्चों के मूड पर निर्भर है। नेटवर्क प्रॉब्लम जैसे झूठ भी बच्चे सीख चुके हैंऔर ईमानदारी जैसे अच्छे गुण बच्चे खो रहे हैं। बच्चों का स्क्रीन टाइम इतना बढ़ गया है कि उनकी आँखों और पूरे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। बच्चे खाना भी ढंग से नहीं खाते औरव्यायाम भी नहीं करते। और सबसे खतरनाक अवगुण यह है कि बच्चे असुरक्षित वेब साइटों पर भी जाते हैं जो उनके लिए आगे चल कर बहुत मुश्किलें पैदा कर देता है।

जैसे हर चीज़ की अच्छाई और बुराई होती है, ऑन-लाइन शिक्षा के भी हैं और आज की परिस्थिति में हमें इस पर भी आश्रित रहना पड़ता है। इसका किस हद तक और कैसे उपयोग करवाना है यह हमें सोचकर निर्णय लेना है। *

अभिलाषा कुमारी
पत्नी श्री विवेक राज
वैज्ञा/इंजी-एसडी, सीएमएसई

अतीत के झरोखे से

माँ किस तरह से अपने बच्चों का लालन-पालन कर लेती; इस बीच कई बार कठिनाई भी आती, पर वे हिम्मत नहीं हारती।

आज हमें छोटी-सी ज़िम्मेदारी भी बहुत मुश्किल में डाल देती है। इसका आशय यह है कि हम संघर्ष के ढांचे में पूरी तरह से फिट नहीं हो पाए। हमारा संघर्ष अधूरा रहा।

मेरे बचपन के वो दिन मुझे अपने अतीत की याद दिलाते हैं कि मेरी माँ ने कितनी कठिनाई से मेरा लालन-पालन किया होगा। वे खुद नहीं सोकर मुझे सुलाती होंगी। जब हम नादान/ना-समझ होंगे तब माँ को कितने परेशान करते होंगे।

जब मैं थोड़ी बड़ी हुई तो माँ के कामों में हाथ बँटाने लगी थी। मेरे दो छोटे-छोटे भाई-बहन भी थे। कभी-कभी माँ किसी काम से बाहर चली जाती तब मुझे उन दोनों भाई-बहनों को देखना पड़ता था। मुझे बहुत गुस्सा भी आता था। मानो कि ऐसा लगता जैसे वे दोनों मेरे दोस्तों के साथ घूमने-फिरने, टी.वी देखने में बाधा डाल रहे हैं। फिर मैं कभी-कभी बहुत गुस्सा करती थी और माँ को बोलती ये दोनों हमेशा इतने ही छोटे रहेंगे क्या। तब माँ हँस कर बोलती नहीं अभी छोटे हैं इसलिए परेशान करते हैं।

कहा जाता है कि जो कुछ सीखा हुआ होता है, वह अवचेतन में हमेशा उपस्थित रहता है। समय आते ही वह चेतन हो जाता है, हमें सक्रिय कर देता है। एक अनजानी राह में हम चल निकलते हैं। अपना काम कर जाते हैं। हम भाई-बहन जब आपस में मिलते हैं, तो इस तरह की बातें कर अपने अतीत की चुगली भी कर लिया करते हैं। उस अतीत में माँ का संघर्ष अधिक दिखता है।

यह सच है कि अतीत हमेशा सुहाना लगता है। पर अतीत के सहारे हमारी गुज़र भी नहीं हो सकती। हमें नए जीवन मूल्यों को अपनाना ही होगा।

वह भले उस समय बुरा लगता हो, पर आज प्यारा लगता है। देखा जाए तो उसी अतीत ने हमें आज तक संभाला हुआ है।

नारी तुम महान हो

*

कोरोना से पहले एवं कोरोना के बाद

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी

भूमिका

विगत दो वर्षों से संपूर्ण विश्व एक विकराल समस्या से जूझ रहा है और इससे पार पाने के उपाय ढूँढने में लगा है। इस समस्या का नाम है कोराना वायरस अर्थात् सार्स-सीओ 02 जनित कोविड-19 महामारी जिसका स्रोत प्राय: चीन के वुहान प्रांत में माना जाता है। इस महामारी से पहले मानव के ग्रसित होने का काल नवंबर-दिसंबर, 2019 माना जाता है। भारत में पहला मरीज 30 जनवरी, 2020 को चिह्नित हुआ और तब से इस महामारी की विकरालता, भयावहता तथा प्रसार अलग-अलग रूपों में विद्यमान रहे हैं।

इस कोविड-19 महामारी का स्रोत कोरोना वायरस नामक एक विषाणु है जो ग्रसित व्यक्तियों के मुँह या नाक से परित्यक्त कणों के माध्यम से स्वस्थ व्यक्ति को ग्रसित कर सकता है। वस्तुत:, यह श्वसन तंत्र से जुड़ी एक समस्या है तथा यह विषाणु नासिका, गले, वायुनली से होते हुए फेफड़ों तक पहुँचकर उन अंगों में विभिन्न प्रभाव छोड़ता है। पहले से गंभीर बीमारियों से ग्रस्त मनुष्यों, वृद्धजनों, गर्भवती महिलाओं तथा कम प्रतिरोधक क्षमताओं वाले व्यक्तियों पर यह ज़्यादा प्रभावकारी हो जाता है। 5% व्यक्तियों में फेफड़ों में संक्रमण के कारण ऑक्सीजन की गिरावट भी पाई जाती है तथा गंभीर होने पर जान भी जा सकती है। संपूर्ण विश्व में 31 मार्च, 2022 तक 49 करोड़ से ज़्यादा लोग इस बीमारी से ग्रसित हो चुके हैं तथा लगभग 61 लाख से ज़्यादा लोग काल-कवलित हो गए हैं। आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार भारत में 31 मार्च, 2022 तक 4.30 करोड़ से ज़्यादा संक्रमण के मामले रिपोर्ट हुए हैं तथा लगभग 5.21 लाख मौतें भी दर्ज की गई हैं।

कोराना का प्रभाव

जाहिर है इस वैश्विक माहमारी का हमारी दिनचर्या या रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर, शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसी मौलिक आवश्यकताओं पर, व्यवसाय व रोज़गार पर गहरा असर पड़ा है। कुल मिलाकर, कोविड-19 के कारण हमारी प्राथमिकताओं को दुबारा परिभाषित करना पड़ा है। आइए, विश्लेषण करें कि कोरोना ने हमारे जनजीवन पर कैसा प्रभाव डाला है।

स्वास्थ्य जगत पर प्रभाव

कोरोना का सबसे व्यापक प्रभाव हमारी स्वास्थ्य व्यवस्थाओं और उससे जुड़े कर्मियों पर पड़ना लाज़िमी है।

जब यह बीमारी आई, तो इसके बारे में जानकारी बिल्कुल नहीं थी। सबसे बड़ी चुनौती इसको जानने-समझने, इसके इलाज के तरीके ढूँढने तथा इसके संक्रमण को नियंत्रित करने के उपाय तलाश करने की थी। स्वास्थ्य सेवा से जुड़े डॉक्टर, नर्स, दवा विक्रेता इत्यादि को तो दिन-रात अपनी सेवाएँ भी देनी थी और अपने-आपको बचाना भी था। संक्रमण की रोकथाम के लिए सामाजिक दूरी की आवश्यकता पर बल दिया गया तथा फेस मास्क, पीपीई किट, सैनिटाइज़र जैसी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया गया। अगर कोरोना के पूर्व एवं पश्चात् में तुलना करें तो इन वस्तुओं का उत्पादन जहाँ बहुत छोटे स्तर पर था आज यह व्यापकता पर है। स्वास्थ्य सेवाओं की बात करें, तो इस बीमारी के कारण नए अस्थायी अस्पताल बनाए गए, बिस्तरों की संख्या में अतिशय वृद्धि की गई। कोरोना के दूसरे दौर में जब ऑक्सीजन की कमी हुई तो त्वरित गति से ऑक्सीजन मुहैया कराने हेतु कई नए ऑक्सीजन संयंत्र खोले गए तथा आज कई अस्पताल ऑक्सीजन का उत्पादन अपने परिसर में ही कर पा रहे हैं। यही कारण है कि हाल ही में कोरोना के तीसरे दौर में इन वस्तुओं की आपूर्ति में कोई व्यापक समस्या नहीं हुई।

सेहत के प्रति जागरूकता

कोरोना से पहले एवं बाद की स्थिति की अगर तुलना करें तो हम देखते हैं कि इस बीमारी के कारण अनायास ही लोगों ने अपने स्वास्थ्य के प्रति सजगता दिखानी शुरू की। विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं तथा डॉक्टरों ने व्यक्तिगत तौर पर ऑडियो-वीडियो के माध्यम से तथा इन्टरनेट के माध्यम से लोगों को इस बात के लिए जागरूक करना शुरू किया कि स्वच्छता एवं साफ-सफाई को अपनाकर एवं अपनी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर हम इस बीमारी से बच सकते हैं, और अगर संक्रमित हो भी गए तो इसके प्रभाव को निश्चित रूपेण कम कर सकते हैं। लोगों ने विभिन्न शारीरिक क्रियाएँ, जैसे व्यायाम, योग साधना, दौड़ना-भागना, खेलों को अपनाना शुरू किया और अपने-आप को तंदुरुस्त करने के लिए उपाय ढूँढने प्रारंभ किया। इसका निश्चित सकारात्मक प्रभाव लोगों के वैयक्तिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य पर पड़ा है।

स्वास्थ्य संबंधी विकार

दूसरी ओर, कोरोना की बीमारी के दौरान संक्रमित होने का भय, अपनों के खोने की आशंका, अपनों के खोने का दु:ख, रोज़गार की हानि, आय में कमी, शिक्षा के अवसरों में कमी जैसी भावनात्मक समस्याओं के कारण अवसाद तथा अन्य मानसिक रोगों की संख्या में वृद्धि हुई। कई लोगों ने इस अवसाद को कम करने के लिए शराब, नशीले पदार्थों एवं अन्य घातक वस्तुओं का सेवन प्रारंभ कर दिया। अगर हम स्वास्थ्य कर्मियों की बात करें तो उन पर स्वास्थ्य सेवाओं का बोझ बहुत ज़्यादा बढ़ गया जिसके कारण स्वास्थ्य कर्मियों पर भी बहुत सारी मानसिक बीमारियों तथा अवसाद ने कब्जा कर लिया। जितनी जल्दी हम कोरोना वायरस से मुक्त हो पाएं, उतनी ही जल्दी हम इन समस्याओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ एक और पहलू उल्लेखनीय है कि सीमित स्वास्थ्य सेवाओं का ध्यान जहाँ कोरोनावायरस के नियंत्रण पर केंद्रित था, कई अन्य रोगों से ग्रसित मरीज़ों के इलाज़ पर कुछ हद तक असर जरूर पड़ा और इसके कारण कई गंभीर मरीज़ों की मौतें भी हुईं।

शिक्षा जगत पर प्रभाव

शिक्षा जगत पर कोरोना वायरस का दूरगामी प्रभाव पड़ा है। लंबे समय तक स्कूलों, कॉलेजों एवं अन्य शिक्षण संस्थानों को बंद करना पड़ा। कोरोना से पहले प्राय: इस बात पर ज़्यादा विचार नहीं किया गया था कि भौतिक रूप से अगर शिक्षक एवं छात्र आमने-सामने न हों तो शिक्षा का स्वरूप कैसा हो। परंतु, कोरोना के कारण शुरूआती व्यवधानों के बाद तेज़ी से हम सब ने ऑन-लाइन शिक्षा के तौर-तरीकों को जाना, सीखा एवं अपनाया। बिना एक दूसरे के संपर्क में आए शिक्षक एवं छात्र साथ आने लगे तथा शिक्षण कार्य चलने लगा। परंतु, बेशक कई तरह के प्रतिबंधों एवं व्यावहारिक दिक्कतों की वजह से शिक्षा व्यवस्था शत-प्रतिशत क्षमता प्राप्त नहीं कर सकी। भौतिक शिक्षा से मिलने वाली सीख के अभाव में तथा घर

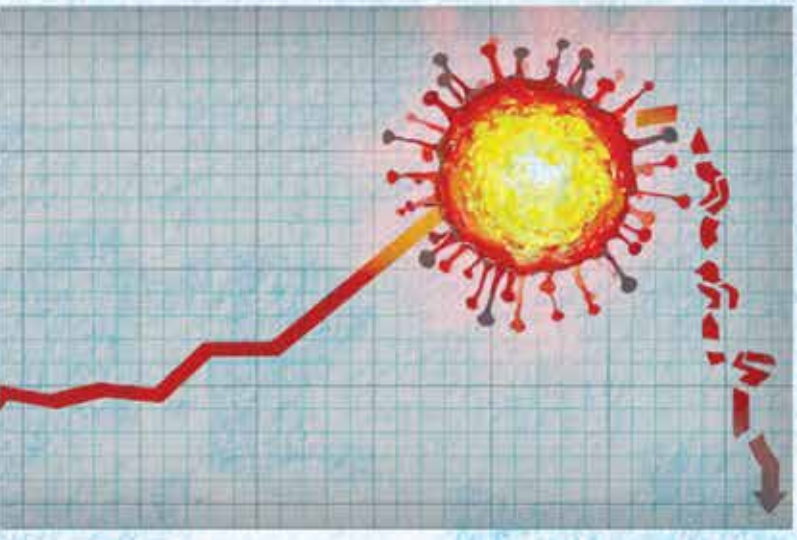

में बंद पड़े-पड़े दिन-रात मोबाइल एवं कंप्यूटर के स्क्रीन से रू-ब-रू बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा है तथा सीखने के अवसरों में भी कमी आई है। यद्यपि इस अवसर का लाभ कई ऑन-लाइन कंपनियों ने उठाया है जो बच्चों एवं बड़ों को भी विभिन्न ऑन-लाइन पाठ्यक्रम परोस रहे हैं तथा भारी आर्थिक लाभ कमा रहे हैं। साथ-ही-साथ, शिक्षार्थियों को भी बहुत हद तक घर-बैठे विभिन्न आयाम सीखने को मिल रहे हैं।

अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

कोरोना से पहले एवं बाद में अगर हम अर्थव्यवस्था की स्थिति पर विचार करें तो देखते हैं कि कोरोना महामारी ने वेश्विक अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव डाला है। विश्वभर में व्यापार-व्यवसाय की दर में कमी आई है। प्राय: सारे देशों में अलग-अलग स्तर की मंदी आई है। रोज़गार के अवसर छिन गए हैं, आय में कमी हुई है। करोड़ों लोग गरीबी की ओर बढ़े हैं। एक अध्ययन के अनुसार यह अनुमान लगाया गया है कि विश्व में कुपोषित लोगों की संख्या लगभग 69 करोड़ से बढ़कर 82 करोड़ हो गई है। भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में अगर देखें तो हम पाते हैं कि भारतीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि की दर वैसे ही कम हो रही थी। विमुद्रीकरण, जीएसटी, बोरेज़गारी आदि की समस्या के कारण जीडीपी की वृद्धि की दर जो 7-8% हुआ करती थी, 2019-20 में मात्र 3.4% ही रह गई थी (स्रोत: एन एस ओ, संशोधित आँकड़े, जनवरी 2022)। कोरोना एवं उसमें लगाए विभिन्न चरणों के लॉकडाउन के कारण व्यवसाय पर बुरा असर पड़ा और जीडीपी की वृद्धि की दर 2020-21 की पहली तिमाही में गिरकर -24.7% रह गई और वर्ष 2020-21 में जीडीपी की वृद्धि दर नकारात्मक अर्थात् -7.3% रही। करोड़ों लोगों के रोज़गार छिन गए एवं बड़ी संख्या में श्रमिकों का पलायन पुन: अपने स्थानों पर हुआ। एक अध्ययन के अनुसार पहले लॉकडाउन में ही 11.4 करोड़ रोज़गार छिन गए तथा अप्रैल-मई, 2021 के दूसरे लॉकडाउन के समय 2.5 करोड़ रोज़गार छिन गए। अपार जनसंख्या के राहत एवं पुनर्वास के लिए किए गए सरकारी एवं गैर-सरकारी उपाय या तो नाकाफी रहे हैं अथवा ये तात्कालित राहत भर ही दे पाए। इस पर फलों-सब्जियों तथा आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखला में भी कमियाँ उजागर हुई हैं जिसके कारण आवश्यक वस्तुओं, विशेषकर खाद्य-पदार्थों के दाम बढ़े हैं।

हालाँकि सरकार ने गरीब कल्याण योजना, आत्मनिर्भर भारत योजना जैसे उपायों से रोज़गार के नए अवसर पैदा करने और आर्थिक तरलता को बढ़ावा देने के लिए महती उपायों की घोषणा की है, परंतु अंतिम आदमी तक इसका लाभ पहुँचने में शायद लंबा वक्त लगे।

हाँ, मगर ऑन-लाइन व्यापार अर्थात् ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्रों में काफी विस्तार हुआ है तथा इसके माध्यम से कुछ हद तक आपूर्ति में निरंतरता बनाई जा सकी।

टीके का विकास एवं टीकाकरण अभियान

स्वास्थ्य तकनीक एवं अर्थव्यवस्था के मिश्रित प्रभावों पर नज़र डालें तो संपूर्ण विश्व में कोरोना प्रतिरोधी टीकों के विकास पर बहुत ज़ोर दिया गया और सालभर के अंदर ही कई टीके आकस्मिक प्रयोग के लिए स्वीकृत किए गए। भारत में भी कोवीशील्ड एवं कोवैक्सीन जैसे टीकों का विकास किया गया तथा उनका इस्तेमाल किया गया। भारत में 31 मार्च, 2022 तक 183 करोड़ से ज़्यादा कोरोना प्रतिरोधी टीके लगाए जा चुके हैं। इस अभियान की सफलता में सरकार के सुचारू कार्यक्रम के साथ-साथ स्वास्थ्य कर्मियों, फ्रंटलाइन वारियर्स जैसे पुलिस,

सफाईकर्मी, इससे जुड़े वैज्ञानिकों एवं तकनीकी विशेषज्ञों के अप्रतिम योगदान का अगर जिक्र न हो तो बेईमानी होगी। विश्वभर में टीका राजनय भी देखने को मिला जिसके तहत टीकों को ज़रूरतमंद एवं गरीब देशों को उपहारस्वरूप भेजा गया। भारत ने भी इसमें बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका निभाई तथा कई सार्क देशों, अन्य एशियाई देशों तथा अपेक्षाकृत गरीब कई अफ्रीकी देशों को टीके प्रदान किए। वस्तुत:, टीकाकरण अभियान की सफलता एवं इसकी प्रभावशीलता पर अभी भी वैज्ञानिक पुष्टि अपूर्ण है परंतु बहुत हद तक इससे कोरोना के प्रति प्रतिरोधक क्षमता के विकास में मदद पहुंचाई है। सबसे ज़रूरी बात कि भारत विश्व के अग्रणी टीका निर्माता के रूप में एक बार पुन: स्थापित हो पाया।

वैयक्तिक व्यवहार में बदलाव

जैसा कि पहले बताया गया कि लोगों में अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ गई है। लोग स्वच्छता के प्रति ज़्यादा सजग हो गए हैं। लोगों ने अकारण एवं अनावश्यक यात्रा एवं भ्रमण पर जाना प्राय: छोड़ दिया है। सबसे बड़ी बात कि लोगों के व्यवहार-आचार का यह एक महत्वपूर्ण अंश बन गया है और लोग किसी भी काम की योजना बनाने के दौरान कोरोना संबंधित नवाचार का ध्यान ज़रूर रखने लगे हैं। राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भौतिक रूप से साथ हुए बिना तकनीक की सहायता लेकर नए तरीके अपनाए जा रहे हैं। अगर इनके लिए भौतिक रूप से साथ होना भी पड़ा तो कोरोना नियमों का पालन किया जाने लगा है। वैयक्तिक एवं सामाजिक अनुशासन बनाने में यह मददगार साबित हुआ है।

गाँवों एवं छोटे शहरों की महत्ता का अहसास

पिछले कई दशकों से लोग शिक्षा एवं रोज़गार के अवसर की तलाश में निरंतर बड़े शहरों एवं महानगरों की ओर पलायित हो रहे थे। परंतु, कोरोना के कारण, मज़बूरी में ही सही, बहुतायत जनसंख्या को अपनी जड़ों की ओर अर्थात् गाँवों या छोटे शहरों की ओर खींचा और इनमें से अधिकांश ने गाँवों तथा छोटे शहरों में वातावरण की शुद्धता, परिवार का साथ, आपसी भाईचारा एवं सहयोग की भावना जैसे कई मुद्दों पर बड़े शहरों एवं महानगरों की तुलना में सकारात्मकता पाई। वस्तुत:, इस कारण लोगों की सोच में एक नया बदलाव आया तथा 'प्रगतिशीलता बनाम पर्यावरण' विषय पर भी सोच को बढ़ावा मिला।

उपसंहार

उपरोक्त बिंदुओं की विवेचना से हम भली-भाँति यह जान सकते हैं कि कोरोना ने कैसे हमारे जीवन को प्रभावित किया है। कहते हैं कि मानव जब-जब प्रकृति का ध्यान रखे बिना विकास की अंधाधुंध दौड़ में शामिल होने लगता है तो प्रकृति अपने स्तर से प्रयास करती है, नए प्रक्रम अपनाती है जिससे मानव की इस सोच पर अंकुश लगाया जा सके तथा उसे वास्तविकताओं से साक्षात्कार कराया जा सके। संभवत: कोरोना वायरस जनित कोविड-19 भी मानव इतिहास में ऐसे ही मील का पत्थर साबित हो रही है जिसने मानव के वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक सोच की दशा-दिशा में बदलाव-सुधार करने का प्रयास किया है। संभवत:, मानव इस महामारी की विभीषिका से सबक लेकर एक बार पुन: प्रकृति एवं विकास में संतुलन बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाने की ओर अग्रसर होगा। *

वह जो युद्ध की ढाल पहनी थी

आनी होमर
सुपुत्री श्रीमती अर्चना वासुदेवन
वरि.सहायक, आईआईएसयू लेखा

उसका जीवन एक युद्ध था।
अत्याचारों के बीच कठिन था
उसका आगे बढ़ना।
हर क्षण, अपने भाग्य से अवगत
जीवन युद्ध में खुद को अकेला पाकर
खड़ी रही अपने लिए बेफिकर
वह जो युद्ध की ढाल पहनी थी।
निडर लड़ी वो खून बहाकर
और, लड़ती रही साँस सकने तक।
बहते हुए हर खून की बूँद में,
थी उसकी जीने की तमन्ना
नस नस में बहते खून में
भी साहस का सार
जीतना तो उसे था ही
लेकिन आसान न थी यह समस्या
हर दिन एक नया युद्ध
हर क्षण उसका एक भाग
फिर भी, उसने जो युद्ध की ढाल पहनी थी,
लड़ती रही अपनी छोटी सी खुशियों के लिए।

*

लेनिना एम एस
तकनीकी अधिकारी-डी
एसआईएस

नई सुबह - नई शुरुआत

निर्मला..... निम्मी..... आँखें खोल..... अरे ये तो मेरे शंकर की आवाज़ है ना। हाँ शंकर ही है। आप कब आए? उनकी मुसकान तो देखो। बिल्कुल नहीं बदला। हम तो कबसे इधर तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं। निम्मी निम्मी कहकर कितने बार तुमको पुकारा। क्या सुनाई नहीं दिया? इतनी बूढ़ी हो गई हो? हमारे गुज़रने के बाद अभी तो चार ही साल होनेवाला है। तो उम्र तो 56 ही होगी ना। ये नाटक बंद करो और जल्दी से ठीक होकर घर चलने की तैयारियाँ करो।

'नाटक' ! तो आपको भी ये सब नाटक ही लगते हैं। ठीक है। तो मैं ऐसा प्रयास करूँ कि जल्दी ही आपके पास आऊँ।

बकवास मत करो निम्मी। अगर तुम आओगी तो बच्चों कोकौन देखेगा? ज़रा उनके बारे में भी सोच।

आप ये मुझसे कह रहे हैं? आपकी निम्मी से? आपको शायद याद नहीं होगा कि हम कैसे मिले थे। कॉलेज में एक धन उगाहने का कार्यक्रम हो रहा था। मैं तो बी.एससी. अंतिम वर्ष की छात्रा थी। हम ने होम साइन्स दोस्तों के साथ मिलकर कुछ नए स्नैक्स बनाए और आप और आपके दोस्त लोगों ने आकर उन स्नैक्सों की तारीफ़ भी की। आप तो पूर्व विद्यार्थी थे। वह थी शुरूआत। फिर मुझसे मिलने के लिए आप आया करते थे। और धीरे-धीरे हमारा रिश्ता कॉलेज के सब लोगों को पता चला। आप को पहले नौकरी मिली। उसके बाद ही मुझे मिली। याद आया कुछ?

कैसे भूल सकता हूँ निम्मी उन दिनों को? दोनों को बैंक में नौकरी मिली। एक को एस.बी.आई. तो दूसरे को

कैनरा बैंक। शादी के बाद दोनों को तीन साल तक अलग-अलग क्षेत्रों में काम करना पड़ा। फिर सेटल करने का मौका मिला तो चार साल के बाद ही विवेक का जन्म हुआ। उसके तीन साल बाद रोहिणी का जन्म।

आप क्यों हँस रहे हैं? आप को तो और भी बच्चे चाहिए था ना। मैंने ही रोक दिया। क्योंकि मेरी तो माँ इस दुनिया से जल्दी चली गई थी। फिर कौन संभालेगा बच्चों को? आप की माँ की भी तबीयत ठीक नहीं थी। और फिर बुढ़ापे में उनको भी कुछ विश्राम मिलना चाहिए था। इस ज़माने की तरह इतने सारेडे-केयर तो नहीं थे। फिर भी बहुत ढूँढकर एक नौकरानी मिली। एक दिन जब मैं जल्दी घर पहुँची तो देखा कि बच्चों को दवा पिलाकर सुलाती है और वह अपना कामकाज पूरा करती है। उसी दिन मैंने फैसला किया है कि अपने बच्चों को अब किसीके हाथ में नहीं देंगे।

आपने तो मना किया। बोले कि निम्मी बच्चे यूँ ही बड़े हो जाएँगे और उस समय तुम बिलकुल अकेली हो जाएगी घर में। हमने कहा कि मेरे बच्चे कभी मुझे अकेले होने नहीं देंगे। और फिर आप भी हैं ना मेरे साथ हमेशा। हमने अच्छा खाना पकाया। आप को और बच्चों को हमेशा खुश रख सके। आपके माँ-बाप और मेरे बाबूजी की भी देखभाल की। समय तो जल्दी बीत गया। बैंक से आने के बाद हम हमेशा साथ ही रहते थे। वॉक के लिए आप मुझे भी साथ ले जाते थे। सामान खरीदना, मंदिर जाना सब कुछ साथ करते थे। घर में इतना अच्छा बगीचा भी था, जिसको बनाए रखना मेरा दिन का काम था। विवेक और रोहिणी तो पढ़ाई में हमेशा पहले स्थान पर आते थे। कितने खुश थे हमलोग। दोनों को इंजीनियर बनना था। एडमिशन मिलने के बाद होस्टल में रुकना पड़ा। तो धीरे-धीरे बच्चे उनकी दुनिया में व्यस्त होने लगे। मिस यू पप्पा और मम्मा में सब कुछ संलग्न किया।

इंजीनियरिंग के अंतिम सेमस्टर में ही विवेक को कैंपस सेलक्शन मिला और वे अमरीका चला गया। रोहिणी की अंतिम परीक्षा के बाद उसकी इच्छा के अनुसार हम एक यात्रा के लिए तैयारी कर रहे थे कि आपको दिल का दौरा पड़ा और आप मुझे बच्चों के साथ छोड़कर चल बसे।

विवेक अमरीका से आया और आपकी तेरहवीं के बाद वो वापस चला गया। रोहिणी को भी उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली जाना था। दो साल ऐसे ही बीत गए। मैं तो बिल्कुल अकेली पड़ी रही घर में। आपके रिश्तेदार और मेरे भी कभी-कभी आया करते थे। उनका भी अपना-अपना काम होगा ना। बच्चे हर दिन बुलाया करते थे। फिर भी शांति नहीं मिलती थी। बच्चों की शादी करवाने का फैसला इस बीच में हुआ। दोनों की शादी एक ही दिन करवाई। रोहिणी इधर कोच्चि में ही थी और विवेक अमरीका में। जब रोहिणी को बेटी हुई तब से मेरी नींद उड़ गई। वह मुझे अपने घर ले जाना चाहती थी बच्ची की देखभाल करने के लिए। मैं बोली कि यहाँ आकर रहना और ऑफिस जाते वक्त बच्ची को इधर छोड़ना। उसके पति को यह स्वीकार नहीं था। मैं आपका घर छोड़कर कैसे जा सकती हूँ? चिड़िया, फूल-पौधे सबकी देखभाल कौन करेगा? यह हमारे सपनों का घर है ना। बच्चों को यह समझ में नहीं आयेगा। फिर विवेक ने भी मुझे फोन करके बताया रोहिणी के साथ जाने को। उसने कहा कि घर का सारा खर्चा उसको निभाना पड़ता है। ये सब बेच देना और माँ मेरे या रोहिणी के साथ रहना। मैंने कहा कि आपके पेंशन का पैसा और किस काम का? तो बच्चों ने कहा कि खर्चा के बारे में आप क्या जानती हैं। आप तो हमेशा घर में बैठी उपदेश देती रहती हैं और हम सोचते

हैं कि घर का रखरखाव करने के लिए अभी क्या-क्या करना पड़ेगा। रोहिणी से मैंने कहा कि दामाद की माँ भी है ना बच्ची को सँभालने के लिए तो वह बोली कि मम्मी जी आपकी तरह घर में बैठनेवाली नहीं हैं। उनकी एक पहचान है। ए जी के कार्यालय में अफ़सर थी। रिटयरमेंट के बाद भी कुछ संगठन की नेता हैं और इसलिए पूरा वक्त व्यस्त रहती हैं।

हा.... हा... हा.....

शंकर जी इतने ज़ोर से क्यों हँस रहे हो? मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं ना।

नहीं निम्मी! हमने आपसे कहा था जब आपने नौकरी छोड़ने का फैसला किया था उस समय ज़िंदगी में एक दिन ऐसी स्थिति आएगी जब हमको पता चलेगा कि हमने कितने बड़ी गलती की। जो कुछ भी तुमने बच्चों के लिए किया उनके मन में वे सब तुम्हारा कर्तव्य था। प्यार, निष्ठा, प्रयास कुछ भी उन लोगों को नहीं दिखता। देनेवाले को हमेशा देना पड़ेगा और लेनेवाला हमेशा लेता रहेगा। यह दुनिया ऐसी ही है। इसलिए सोच-सोचकर तुम बूढ़ी और बीमार बन गई और अस्पताल में मौत का इंतज़ार कर रही हो। तुम्हें और भी ज़िन्दगी जीना है निम्मी। हमने सिर्फ बच्चों के लिए नहीं जिया है। तुम्हारे लिए भी जिया है। हमें पता था कि हमारे चले जाने के बाद तुमको कुछ न कुछ ज़रूरत पड़ेगी। इसलिए मैंने तुम्हारे नाम कुछ पैसे बैंक में एफडी डाले थे। मेरे इन्श्योरेन्स के पैसे तो सारे के सारे बच्चे ले गए हैं ना, कोई बात नहीं। इसमें उन लोगों का कोई हक नहीं है। मेरी बात ध्यान से सुनो। अभी भी कुछ करने की उम्र है।तुम्हें क्या हुआ है? तुम इतना अच्छा खाना पकाती हो। सब लोग उसकी तारीफ करते हैं ना। तो एक केटरिंग सर्विस शुरू कीजिए इस पैसे से। मेरे और आपके दोस्त हैं ना, उनको भी साथ लेना। इस दुनिया में बहुत सारे लोग है जो हमारे बच्चों की तरह इंजीनियर नहीं हैं, काम की तलाश में है। इन लोगों को कुछ काम भी मिलेगा। हमारे पड़ोस के कॉलोनी में बहुत गरीब लोग रहते हैं। उनमें से ज़रूर कुछ लोग मिलेंगे जो तुम्हारे इस काम में साथ देंगे। अस्पताल भी वे लोग ही लेकर आए हैं ना?

तो जल्दी उठना। बच्चों को फोन करके बोलना कि निर्मला भवन कोई नहीं बेचेगा। खर्च के बारे में भी कुछ नहीं बोलना। अगर बच्चे लोग अम्मा को देखना चाहते हैं तो आ सकते हैं। बस इतना। हमारे घर, फूल-पौधे, चिड़िया सब कुछ इधर ही रहेंगे। अब तुम सोच रही होगी कि बुढ़ापे में बच्चे ही काम आएँगे। नहीं निम्मी। अगर पैसा है तो किसी संगठन में अडवान्स बुकिंग करो। सब कुछ वे लोग संभालेंगे। यह दुनिया अब ऐसी है। बच्चों को उनकी ज़िंदगी जीने दो। और तुम अपनी ज़िंदगी जी लो। माँ को देवी नहीं बनना, इज्जतदार औरत ही बनना है जो खुद अपने पैरों पर खड़ी रहती है। तो शुरू करो। हम हमेशा तुम्हारे साथ हैं।

शंकर .... किधर गए। सपना था। अलमारी में देखा तो डोक्यूमेंट्स मिले। 50 लाख का एफडी। अब पता चला जब शंकर ने माँ की ज़मीन बेच दी थी तब बहुत पूछने पर भी शंकर ने मुझे नहीं बताया कि उस पैसे का उन्होंने क्या किया। अगर बताते तो हम उसी वक्त बच्चों के नाम करने के लिए कहते।

आप हमेशा ठीक थे शंकर। अब एक नई शुरूआत होगी। निर्मला भवन में 'शंकर केटरिंग सर्विस'। माँ तो मैं हमेशा रहूंगी। अपने लिए भी थोड़ा जी लूँ।

नई सुबह, नई शुरूआत। *

अभिलाषा कुमारी
पत्नी श्री विवेक राज
वैज्ञा/इंजी-एसडी, सीएमएसई

एक नारी

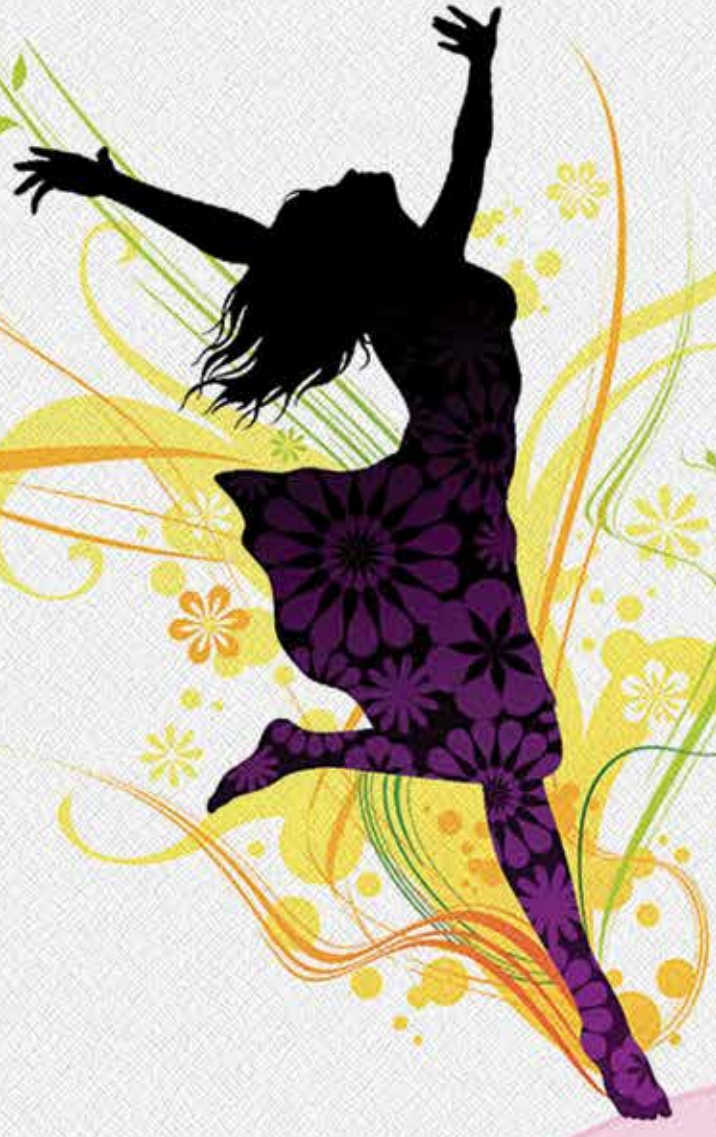

क्या एक नारी आगे नहीं बढ़ सकती
क्यों वो हमेशा से ही दूसरों के कहने पर चलेगी
क्यों वो खुद अपनी मर्जी से कुछ कर नहीं सकती
आखिर कब तक वो पिंजरों में ऐसे ही तड़पती रहेगी
तुम कुछ भी करो, कैसे भी करो, बहुत खूब है
अगर यही काम एक औरत करे, तो वो गलत है
क्यों हो रहा है हर जगह उस पर अत्याचार
मतलब हो, तो तुम बहुत सुंदर दिखती हो
मतलब खत्म हो, तो यह काम क्यों कर रही हो
यह ज़िंदगी दी है भगवान ने सबको एक समान
तो क्यों हो रहा नारी का हर बार अपमान!!!
तो क्यों हो रहा नारी का हर बार अपमान!!! *

शौभिक घोष
वैज्ञा/इंजी-एससी,
एलवीआईएस

गणतंत्र क्या होता है?

हम सभी हर साल दो प्रमुख सार्वजनिक अवकाश मनाते हैं-15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस और 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस। स्वतंत्रता शब्द का अर्थ अधिकतर लोगों को पता है, परंतु गणतंत्र शब्द का अर्थ कम लोगों को समझ आता है। अधिकांश शिक्षित नागरिक 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाने के महत्व से अवगत हैं। इसी दिन 1950 में हमारा संविधान लागू किया गया था। लेकिन, हमें यह समझना आवश्यक है कि किसी देश में संविधान होने से वह एक गणतंत्र नहीं होता। हमारे संविधान से पहले भी, भारत पर शासन करने के लिए नियमों की सूची थी, भारत सरकार एक्ट, 1935। तो फिर गणतंत्र क्या है? इसका उत्तर देने के लिए, हमें दो अवधारणाओं को समझने की ज़रूरत है-राष्ट्राध्यक्ष और राष्ट्र की सरकार।

राष्ट्रीय सरकार उन लोगों का एक निकाय है जो देश के प्रशासन की देखभाल करता है। इसमें मंत्री, नौकरशाह, राज्य सरकारें आदि शामिल हैं। एक देश जो अपने नागरिकों को स्वतंत्र रूप से सरकार के प्रमुखों का चुनाव करने का अवसर देता है, और उन्हें ऐसे पदों के लिए चुनाव लड़ने की अनुमति देता है, लोकतंत्र कहलाता है। भारत में, नागरिकों को विधायक और सांसद का चुनाव करने को मिलता है, जो बदले में सरकार का नेतृत्व करने के लिए मंत्रियों को चुनते हैं। अर्थात्, भारत के नागरिक यह निर्धारित करते हैं कि उन पर कौन शासन करेगा, और इस प्रकार भारत एक लोकतंत्र है।

कई अन्य देश जो अपनी सरकार चुनते हैं, वे भी लोकतंत्र कहलाते हैं। उदाहरण के लिए, यूएसए, यूके, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया आदि। लेकिन ऐसे देश भी हैं जहां सरकार के सदस्यों के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए चीन, सऊदी अरब, उत्तर कोरिया आदि। ऐसे देशों को लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता।

राष्ट्राध्यक्ष एक व्यक्तित्व होता है जो आधिकारिक तौर पर राष्ट्र का प्रतीक है। वही सभी सरकारी निकायों और सशस्त्र बलों का सर्वोच्च प्रमुख होता है। हालांकि ऐसा व्यक्ति सरकार के हर निकाय का मुखिया होता है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि वह सरकार का हिस्सा हो। कई राष्ट्रों में राष्ट्राध्यक्ष प्रशासन के लिए शक्तिहीन व्यक्ति होता है, और राष्ट्र के लिए एक औपचारिक उद्देश्य को पूरा करता है। भारत में, राष्ट्रपति राष्ट्र के प्रमुख के उद्देश्य को पूरा करते हैं, जबकि उनके पास शासन के लिए सीमित शक्ति होती है। इसी प्रकार इंग्लैंड की रानी अपने देश की राष्ट्राध्यक्ष का कार्य करती है, जब कि देश का शासन लोगों द्वारा चुनी सरकार तथा प्रधान मंत्री करते हैं। जिस देश में राज्य का मुखिया सम्राट अथवा राजा नहीं होता, उसे गणतंत्र कहा जाता है। चूंकि, भारत का कोई राजा नहीं है, और इसके बजाय एक राष्ट्रपति प्रभारी है, यह एक गणतंत्र है। अन्य देश जहाँ राष्ट्रपति प्रमुख होते हैं, उनको भी गणराज्य कहा जाता है। उदाहरण के लिए यूएसए, चीन, फ्रांस, रूस आदि। गणतंत्र कहे जाने वाले देश के लिए राष्ट्रपति का लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित होना आवश्यक नहीं है। यहां तक कि चीन और उत्तर कोरिया जैसे देशों को भी गणतंत्र कहा जाता है, हालांकि उनके राष्ट्रपति का चुनाव लोगों द्वारा नहीं किया जाता है।

अब जब हम जानते हैं कि गणतंत्र क्या है, तो मन में सवाल आता है कि हम 26 जनवरी को अपने गणतंत्र दिवस के रूप में क्यों मनाते हैं? जब अंग्रेज़ों ने भारत छोड़ा, तो उन्होंने भारत और पाकिस्तान के डोमिनियन बनाए। डोमिनियन एक ऐसा देश होता है जिसके राष्ट्र का प्रमुख इंग्लैंड का सम्राट होते हैं परंतु इस देश की अपनी स्वतंत्र सरकार होती है, जो ब्रिटिश संसद के अधीन नहीं होती। आज भी कई देश जो किसी समय ब्रिटिश शासन में हुआ करते थे, उन्होंने ब्रिटिश डोमिनियन बने रहना चुना, जैसे कि ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, जमैका आदि। इस प्रकार, स्वतंत्रता के बाद से संविधान के लागू होने तक भी, भारत के प्रमुख ब्रिटिश किंग जॉर्ज VI थे। यद्यपि राजा भारत का केवल एक प्रतीकात्मक सम्राट था, गणतंत्र दिवस के दिन का उत्सव ब्रिटिश राज के अतीत से पूर्ण अलगाव का प्रतीक है। *

विद्यावाचस्पति (डॉक्टर ऑफ फिलोसफी) से सम्मानित

श्रीमती राखी सिंह (पत्नी, श्री प्रियदर्शन, उप-प्रधान, पीएसएमडी/एएसएटीजी/एआईएस/आईआईएसयू) को ***"विनिवेश नीति के विशेष संदर्भ में सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों की सततता का अध्ययन"*** विषयक शोध-प्रबंध के लिए बिड़ला प्रौद्योगिकी संस्थान (बीआईटी) मेसरा, पटना कैंपस से प्रबंधन संकाय में विद्यावाचस्पति (डॉक्टरऑफ फिलोसफी) की उपाधि प्रदान की गई। उन्होंने अपना शोध कार्य डॉ. विजय अग्रवाल, अध्यक्ष, प्रबंधन विभाग, बीआईटी मेसरा, पटना कैंपस के मार्गदर्शन में किया। शोध कार्य के दौरान अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में उनके पाँच प्रकाशन हैं।

डॉ. राखी सिंह को हार्दिक बधाइयाँ!

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी

एकल अक्षीय परिवीक्षण यंत्रावली

परिचय

एकल अक्षीय परिवीक्षण यंत्रावली (Single Axis Scan Mechanism or SASM) ओशियनसैट-3 उपग्रह के समुद्री सतह ताप मॉनिटर (Sea Surface Temperature Monitor) प्रदायभार का एक महत्वपूर्ण तंत्र है। इसका कुल आकार ϕ 131.6 मि.मी x 248 मि.मी.(ऊँचाई) है और इसका द्रव्यमान 2.6 कि.ग्रा. है।

इस यंत्रावली का उद्देश्य पृथ्वी का परिवीक्षण कर पृथ्वी एवं इसके वायुमंडल से जनित विभिन्न तरंग-दैर्घ्य की विद्युत-चुंबकीय तरंगों को अंतःनिहित दर्पण से परावर्तित कर प्रदायभार में अवस्थित प्रकाशीय तंत्र तक पहुंचाना है। ये प्रकाशीय तंत्र इन तरंगों को संसाधित कर उपयोगी सूचना प्रदान करते हैं। आपको ज्ञात होगा कि ओशियनसैट-3 एक ध्रुवीय उपग्रह है, अर्थात् यह अपनी कक्षा में पृथ्वी के अत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव की दिशा में परिक्रमा करता रहता है। इस परिवीक्षण यंत्रावली का अभिकल्प इस प्रकार का है कि यह पृथ्वी का परिवीक्षण एक पट्टी के रूप में करता है। पश्चिम से पूर्व की ओर परिवीक्षण करते हुए यह एक बार में 1500 कि.मी. चौड़ी एक पट्टी का परिवीक्षण करता है। उपग्रह के उत्तर-दक्षिण दिशा में परिचालन से उत्तर-दक्षिण दिशा में परिवीक्षण की गति निर्धारित होती है। हर अवस्था में प्रकाशीय अक्ष एवं परिवीक्षण अक्ष मेल खाते हैं।

परिवीक्षण की दिशा द्विदिशीय है परंतु ज़रूरी चित्र सिर्फ एक ही दिशा में लिया जाता है। यंत्रावली ±90 अंश में परिवीक्षण करती है जिसमें दोनों नितांत स्थानों पर एक तरफ कृष्णिका (Black body) बिंदु है तो दूसरी तरफ 'गहन अंतरिक्ष दर्श' (Deep Space Look) अवस्थित है। चित्र लेने का क्षेत्र ±47.6 अंश है। परिवीक्षण के प्रत्येक चक्र (Scan cycle) में 20.5 सेकेंड का समय लगता है। प्रत्येक चक्र में दो चित्र लिए जाते हैं तथा प्रत्यावर्ती रूप से एक-एक बार दोनों नितांत बिंदुओं पर यंत्रावली पहुँचती है।

संरचना

एकल अक्षीय परिवीक्षण यंत्रावली में एक परिवीक्षण दर्पण (Scan mirror) या दर्पण होता है जो उच्च परावर्तन गुणांक वाला होता है तथा उस दर्पण को ही दोलनी गति (Oscillating Motion) देने का काम यंत्रावली करती है। यह दर्पण इस यंत्रावली में अवस्थित शाफ्ट (Shaft) पर आरूढ़ित किया जाता है तथा इसके लिए एक ब्रैकेट का उपयोग होता है। यह शाफ्ट कोणीय स्पर्श बॉल बेयरिंग (Angular Contact Ball Bearing) के दो युग्मों पर अवलंबित होता है। विशालकोणी बल आघूर्ण मोटर (Wide Angle Torque Motor), जिसका विकास आईआईएसयू के अंदर ही किया गया है, शाफ्ट को कोणीय दोलनी गति प्रदान करता है। शाफ्ट के कोणीय विस्थापन को मापने के लिए घूर्णी ट्रांसड्यूसर होता है। इस ट्रांसड्यूसर को भी आईआईएसयू में ही विकसित किया गया है तथा इसके विकास से विशाल मात्रा में विदेशी आयात को विस्थापित कर स्वदेशी को बढ़ावा देने में सफलता मिली है। बेयरिंग के

दोनों युग्मों को अवस्थित करने के लिए बेयरिंग हाउसिंग हैं। मोटर, ट्रांसड्यूसर एवं शाफ्ट इत्यादि मुख्य हाउसिंग में अवस्थित रहते हैं। शाफ्ट के कोणीय विस्थापन को यांत्रिक सीमक (Mechanical stopper) के माध्यम से ±91.4° के मध्य नियंत्रित किया गया है। इस प्रकार, इस यंत्रावली में छोटे-बड़े 50 अवयवों का समावेश किया जाता है। शाफ्ट, ब्रैकेट, बेयरिंग हाउसिंग टाइटेनियम मिश्रधातु से बने होते हैं। मुख्य हाउसिंग ऐलुमिनियम मिश्रधातु का बना होता है जिसकी उच्च तापीय चालकता के कारण मोटर के परिचालन से उत्पन्न ऊष्मा को यंत्रावली से बाहर चालित किया जाता है।

समुच्चयन

इस यंत्रावली के समुच्चयन के समय कुछ मुख्य विशेष एवं क्रांतिक बातों का ध्यान रखा जाता है तथा इसके लिए ज़रूरी फिक्सचर भी विकसित किए गए हैं। ये बिंदु निम्नांकित हैं:

(i) ट्रांसड्यूसर के रोटर (Rotor) एवं स्टैटर (Stator) के बीच अक्षीय दूरी 100 से 300 माइक्रोमीटर के मध्य ही रहनी चाहिए। ज़्यादा दूरी रहने से इन दोनों में अवस्थित ट्रैकों के बीच प्रेरण युग्मन (Inductive coupling) क्षीणकाय होगी तथा ज़रूरी निर्गम वोल्टेज नहीं मिलेगा। ज़्यादा नज़दीकी से रोटर एवं स्टैटर के संपर्क में आकर घिसने तथा खराब होने की आशंका रहती है।

(ii) बेयरिंग के समुच्चयन के समय उच्च कोटि की स्वच्छता आवश्यक होती है ताकि इसमें अवस्थित स्नेहक तथा अन्य अवयव संक्रमित न हों तथा अनावश्यक घर्षण न पैदा करें।

(iii) दोनों बेयरिंगों का संकेद्रित होना अत्यावश्यक है। इस प्रयोजन से अभिकल्प और विनिर्माण के समय ही इसका ख्याल रखा जाता है ताकि संकेद्री त्रुटि 5 माइक्रोमीटर से अधिक न हो।

(iv) शाफ्ट, ब्रैकेट एवं दर्पण के समुच्चयन में ज़्यादा ध्यान दिया जाता है ताकि दर्पण का गुरुत्वीय द्रव्यमान केंद्र परिवीक्षण अक्ष पर ही रहे।

(v) मोटर के रोटर एवं स्टैटर के बीच संकेद्री त्रुटि कम रहनी चाहिए जिसमें दोनों के बीच त्रिज्यीय दूरी सभी जगह बराबर रहे तथा इसमें त्रुटि 50 माइक्रोमीटर से कम रहे।

(vi) ट्रांसड्यूसर रोटर के निर्गम के लिए तारों का एक युग्म रोटर से निकलकर शाफ्ट एवं ब्रैकेट में अवस्थित संकीर्ण लंबे छिद्रों से होकर गुजरता है। इसके समुच्चयन के समय विशेष ध्यान रखा जाता है कि इन तारों को कोई नुकसान न पहुंचे।

विनिर्देश

बिंबन क्षेत्र	±47.6°
परिवीक्षण चक्र समय	20.5 सेकेंड
अवस्था शुद्धता	±150 आर्क-सेकेंड
नाडिर शुद्धता	±3 आर्क-मिनट
प्रचालन तापमान	10° से. – 40° से.
कंपन निवेश	20g (ज़्या), 11.8 grms (यादृच्छिक)

विशिष्ट गुण

परिवीक्षण यंत्रावली का अभिकल्प इस प्रकार से किया गया है कि यह अति दुर्नम्य है तथा इसकी पहली एवं दूसरी अनुनादी आवृत्तियां 180 हर्ट्ज़ एवं 209 हर्ट्ज़ हैं। सभी ताप-निर्वात एवं कंपन परीक्षण करके इस यंत्रावली का पूर्णरूपेण चरित्रन कर लिया गया है। उड़ान प्रतिरूप (Flight model) को विकास कर सारे विनिर्देश प्राप्त कर लिए गए हैं।

वर्तमान अवस्था

इस यंत्रावली के उड़ान प्रतिरूप (Flight Model) को सारे परीक्षणों एवं मूल्यांकनों के बाद प्रदायभार में एकीकृत करने हेतु भेज दिया गया। तदुपरांत, प्रदायभार में एकीकरण किया गया तथा प्रदायभार स्तर पर परीक्षण एवं मूल्यांकन भी किए जा चुके हैं। इन सारे परीक्षणों में इस यंत्रावली का प्रदर्शन शानदार रहा है। कुछ ही दिनों में इसे उपग्रह के साथ एकीकृत किया जाना है एवं एक-दो महीने के अंदर इस उपग्रह का पीएसएलवी प्रमोचन यान द्वारा इसकी नियत कक्षा में प्रमोचन किया जाएगा। *

लक्ष्मी जी
सहा. निदेशक (रा.भा.), वीकेसी

भाव एक अनुभव

देखूँ आस-पास तो पाता यही हूँ
मालूम नहीं कि मैं कितना सही हूँ।
विचारों को शब्दों में बदलने की कोशिश,
आप बताइए इसमें है कितनी कशिश।

खुद पर न बीती सच्चाई में
हर कोई पाता है अच्छाई।
खुद न खाया चोट तो
दर्द एक एहसास ऐसे ही।

किसी के टूटे दिल के टुकड़ों से
कोई अपना चेहरा निखारता है।
किसी के रोने की आवाज़ सुन
कोई अपने लफ्ज़ों को देता है धुन।

किसी ने ठीक ही कहा है कभी
अनुकंपा दिखानेवाले लगभग सभी
मन ही मन यही कहते हैं तभी
अच्छा हुआ हम पर यह बीता नहीं।

सावधान रहे शब्दों के मिठास से
ज्यादा हो गया तो है हानिकारक।
सच भले कड़वा हो, मगर
आखिर यही सिद्ध होगा लाभदायक।

प्यार को नाप-तोलकर, बताइए
पाया क्या था किंग लियर।
किसी गीत में कहते हैं गुलज़ार
बूंद है नूर की यह प्यार।

दिखाया-सुनाया नहीं जा सकता
दिल में छुपी उन लहरों को।
कोमल पंखुडियों पर बैठी हैं
छूना नहीं इन तितलियों के पर को। *

टिप्पणियाँ / NOTINGS

1. हमें इस विषय पर और कार्रवाई करने की आवश्यकता नहीं है। / We need not pursue the matter further.
2. अनुरोध है कि इस मामले में शीघ्र कार्रवाई करें।
Early action in the matter is requested.
3. उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
Draft reply is put up for approval.
4. संबंधित कागज़-पत्र प्रस्तुत किए जाएं।
Relevant papers be put up.
5. कार्यालय के टिप्पणी से मैं पूर्णतया सहमत हूँ।
If fully agree with the office note.
6. बकाया काम के निपटारे के लिए कारगर उपाय किए जाएं। / Effective steps should be taken to clear the arrears.
7. बार-बार अनुस्मारक भेजने के बावजूद अभी तक सूचना नहीं मिली है। / Inspite of repeated reminders, the information has not been received so far.
8. विभागीय कार्रवाई की जा रही है।
Departmental action is in progress.
9. सेवा स्थिति संतोषप्रद नहीं है।
Service conditions are not satisfactory.
10. गुप्त अनुदेश जारी किए गए हैं।
Secret instructions have been issued.
11. इसके लिए प्रशासनिक अनुमोदन अपेक्षित है।
This requires administrative approval.
12. अपेक्षित कागज़-पत्र नीचे रखे हैं।
The required papers are placed below.
13. सभी विभागाध्यक्षों को अर्ध-शासकीय पत्र का मसौदा प्रस्तुत करें। / Put up draft of D.O. to all heads of departments.
14. इस आदेश को पूर्वप्रभावी नहीं किया जा सकता।
Retrospective effect cannot be given to this order.
15. उपर्युक्त विषय पर आपकी आगे की टिप्पणी/राय की प्रतीक्षा है। / Your further remarks/view on the above subject are awaited.
16. इस कार्यालय को इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है।
This office has no information in this respect.
17. लेखन सामग्री की खरीद के लिए अग्रिम मंजूर किया जाए। / Advance for purchase of stationary may be sanctioned.
18. यदि अनुमोदन करें तो उपर्युक्त सुझाव के अनुसार पत्र भेजा जाएगा। / If approved, a letter will be sent on the above line.
19. अपेक्षित सूचना इसके साथ भेजी जा रही है।
Required information is furnished herewith.
20. सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी ली जाए। / Sanction of the competent authority may be obtained.
21. उपर्युक्त संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए। / Above resolution be published in the gazette of India.
22. अधोहस्ताक्षरी को निर्देश हुआ है कि आपके दिनांक ..... के पत्र संख्या की पावती भेजी जाए।
Undersigned is directed to acknowledge the recipt of your letter no..... dated.....
23. समय पर अनुपालन सुनिश्चित कर लिया जाए।
Timely compliance may be ensured.
24. इस कार्यालय के पत्र संख्य..... के द्वारा सूचना पहले ही भेजी जा चुकी है। / Information has already been sent under this office letter no.....
25. कृपया इसे पिछले कागज़-पत्रों के साथ प्रस्तुत करें।
Please put up with previous papers.
26. यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
Action may be taken as proposed.
27. मामले के सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद
After taking into consideration all aspects of the issue.
28. कृपया पत्राचार में हिंदी का प्रयोग करें।
Please use Hindi correspondence.
29. रिपोर्ट समय पर प्रस्तुत करने की व्यवस्था की जा रही है।
Arrangements are being made to ensure timely submission of report.
30. प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए।
Administrative approval may be obtained.

अंतरिक्ष शब्दावली / SPACE GLOSSARY

Landmark - पहचान-चिह्न
Landscape - भू-परिदृश्य
Landslide - भू-स्खलन
Lapse - त्रुटि
Large deflection - दीर्घ विक्षेपण
Latitude - अक्षांश
Launch vehicle - प्रमोचन यान
Launching platform - प्रमोचन मंच
Layer - परत, स्तर
Layout - अभिविन्यास
Leakage - क्षरण
Life cycle - जीवन-चक्र
Lift off - उत्थापन
Light beam - प्रकाश किरणपुंज
Light year - प्रकाश वर्ष
Linear structure - रैखिक संरचना
Linear system - रैखिक प्रणाली
Linearity - रैखिकता
Link - श्रृंखला
Liquid propellant - द्रव नोदक
Liquid propulsion - द्रव नोदन
Liquid stage - द्रव चरण
Literature - साहित्य
Lithosphere - स्थल मंडल
Longitude - रेखांश
Longitudinal - अनुदैर्घ्य
Longitudinal acceleration - अनुदैर्घ्य त्वरण
Low pressure - निम्न दाब
Lubricant - स्नेहक
Lubrication - स्नेहन
Lunar atmosphere - चंद्र-वायुमंडल
Lunar satellite - चंद्र-उपग्रह
Lunar year - चंद्र-वर्ष
Lyosphere - प्रवमंडल
Machine - यंत्र, मशीन
Macro assembler - स्थूल कोडांतरक
Macro state - स्थूल अवस्था
Magnetic - चुंबकीय
Magnetic field - चुंबकीय क्षेत्र
Magnetic force - चुंबकीय बल
Magneto dynamics - चुंबकीय गतिकी
Magnetography - चुंबक अभिलेखन
Magnification - आवर्धन
Maintenance - अनुरक्षण
Majority - बहुसंख्यक
Manifestation - अभिव्यक्ति
Manometer - दाबांतरमापी
Manpower - मानव शक्ति
Mass - द्रव्यमान
Material - सामग्री
Measurement - मापन
Mechanical - यांत्रिक

प्रशासनिक शब्दावली / ADMINISTRATIVE GLOSSARY

Due - देय, नियत

Due date - नियत तिथि

Dues - देय राशि

Duly - विधिवत्

Duplicate - अनुलिपि

Duration - अवधि

Dynamics - गतिकी

Earliest possible - यथाशीघ्र

Earned leave - अर्जित छुट्टी, अर्जितअवकाश

Economy - अर्थव्यवस्था

Editorial - संपादकीय

Educational - शैक्षिक

Election - निर्वाचन, चुनाव

Elector - निर्वाचक

Electorate - निर्वाचक मंडल

Electrification - विद्युतीकरण

Elementary - प्रारंभिक

Eligibility - पात्रता

Embarrassment - शर्मिंदगी

Emblem - संप्रतीक

Empowerment - सशक्तीकरण

Enactment - अधिनियमन

Encashment - नकदीकरण

Enclosure - अनुलग्नक

Endorsement - पृष्ठांकन

Energy - ऊर्जा

Enforcement - प्रवर्तन

Enhancement - वृद्धि

Enlargement - परिवर्धन

Enquiry - पूछताछ

Enquiry Officer - जाँच अधिकारी

Environment - पर्यावरण

Epidemic - महामारी

Equilibrium - संतुलन

Equivalent - समकक्ष

Eradication - उन्मूलन

Essential - अनिवार्य

Essential service - अनिवार्य सेवा

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

लक्ष्मी जी
सहायक निदेशक (रा.भा) (तदर्थ)

1 उस एकमात्र महाद्वीप का नाम बताइए, जहां कोई रेगिस्तान नहीं है?

2 किस देश की राजधानी का नाम है मैड्रिड ?

3 दादा साहेब फाल्के पुरस्कार का संबंध किस क्षेत्र से है ?

4 विश्व पर्यावरण दिवस कब मनाया जाता था ?

5 दक्षिण अफ्रिका की मुद्रा का क्या नाम है ?

6 पहला पुरुष विश्वकप क्रिकेट किस साल आयोजित हुआ था ?

7 भारत से ऑस्कर हेतु नामित पहली फिल्म ?

8 हिंदी में बात करनेवाले विश्व के प्रथम रोबोट का नाम बताइए।

9 मानव शरीर की सबसे बड़ी हड्डी फीमर ..... में है।

10 किस ग्रह का उपग्रह है टाइटन ?

उत्तर

1 यूरोप
2 स्पेन
3 फिल्म
4 5 जून
5 रैंड (Rand)
6 1975
7 मदर इंडिया
8 रोबेन
9 जांघ
10 शनि

राजीव सिन्हा
ग्रुप निदेशक, एमडीपीजी

यादगार होली - और बर्फ पिघल गई.....

"कल क्या है, याद हैं न मेरे यार" चाय की चुस्कियाँ लेते हुए विक्रम ने मुस्कुरा कर पूछा।

"हाँ यार इस दिन को कैसे भूल सकता हूँ" मैंने भी मुस्कुरा कर जवाब दिया।

सोफे पर जो 56 साल का व्यक्ति बैठा था वो मेरा बचपन का दोस्त विक्रम था और आज मेरे घर अपने सहारा मुंबई से आया था। कल होली का दिन था और पिछले 40-42 सालों में ऐसी कोई होली नहीं बीती जिसमें या तो विक्रम मेरे घर आकर न मनाया हो या मैंने उसके घर जाकर ना मनाया हो। उसने भी हँस कर चाय ख़त्म की और उठकर गले लग गया। उसके गले लगते ही मानो यादों की बारात, अपनी खट्टी-मीठी बचपन की दोस्ती की वो ही महक मेरे जेहन में डाल दी जो एक सच्चे दोस्त के गले से लगने के बाद महसूस होती है। एक ऐसी याद जो होली से जुड़ी थी और जिसने हमारे जीवन को पूरी तरह से मोड़ दिया था। यादों के बवंडर में गोते खाते हुए मेरा मन समय के बादलों पर से छलांग मारते हुए भूतकाल में उस समय में पहुँच गया जब हम दोनों ही 15-16 वर्ष के अल्हड़ बालक थे और दसवीं की कक्षा में पढ़ाई करते थे। ऐसा क्या ख़ास था जिसको याद करके मैं इतना भाव विह्वल हो रहा था। आइए आपको विस्तार से उस घटना के बारे में बताता हूँ।

मैं और विक्रम दोनों एक ही मोहल्ले में रहते थे और संयोगवश दोनों एक ही कक्षा में थे। परंतु हम दोनों का स्कूल अलग अलग था। हमारे सामाजिक परिवेश भी अलग अलग थे। मैं उत्तर भारतीय हिंदी बोलने वाले परिवार से था और विक्रम एक दक्षिण भारतीय कोंकणी परिवार से था। भाषा और संस्कृति में भिन्नता होते हुए भी हम दोनों बचपन के दोस्त थे और हमारी दोस्ती बहुत गहरी मानी जाती थी, शोले के जय और वीरू जैसे। हमारे परिवार भी एक-दूसरे के साथ घुले-मिले हुए थे और हम हर पर्व साथ-साथ मनाते थे। मैं हिंदी माध्यम से सरकारी स्कूल में पढ़ता था और विक्रम अंग्रेजी माध्यम से केंद्रीय विद्यालय में। हम लोगों के स्कूल अलग-अलग थे, पर शाम होते ही हम ऐसे आपस में जुड़ जाते थे जैसे पतंग और मांझा। हमारी सोच एक जैसी थी और हमारे शौक

भी। हमें वस्तुएँ संग्रह का बहुत ज़्यादा शौक था जैसा कि इस उम्र में बच्चों को होता है। हम डाक टिकट, देश-विदेश के सिक्के, इलेक्ट्रोनिक्स के सर्किट और पता नहीं क्या-क्या इकठ्ठे करते थे। पॉकेट मनी के सारे पैसे, हम इन संग्रह और शौक में खर्च कर देते थे। छुट्टी के दिन हम दोनों साइकिल लेकर शहर में जगह-जगह मारे फिरते थे किसी दुकान से सिक्के और किसी दुकान से डाक टिकिट खरीदने के लिए। हमारी एक दूकान बहुत पहचान की हो गई थी। वो हमारे लिए देश-विदेश के अति प्राचीन सिक्के और डाक टिकट लाकर रखता था। हमारे संग्रह भी बहुत विशाल हो गए थे, ऐसे में एक दिन मुझे एक सिक्के के बारे में पता चला जो कि 1800 में ईस्ट इंडिया कंपनी के शुरूआती दिनों में प्रचलन में था। सिक्का बहुत ही दुर्लभ था और महंगा भी, परंतु दुकानदार ने मुझे भरोसा दिलाया कि वो कैसे भी इस सिक्के की व्यवस्था कर देगा। बात आई गई हो गयी। एक दिन शनिवार को हम दोनों दोस्त उसी दुकान पर पहुँचे मेरी जेब में 20 रुपया ही था। दुकानदार ने हमें बहुत सारी डाक टिकट और सिक्के दिखाए जो 5-6 रुपये के थे। हमने अपने पैसों से उन्हें खरीद लिया।

तभी दुकानदार को याद आया और वो बोला "भैया आपने जो सिक्का मुझे बोला था वो मैंने जुगाड़ लिया है परंतु मुझे 30 रूपये में पड़ा, आपको मैं ये 35 रुपये में दे दूँगा।" दुकानदार की ये बात सुन ख़ुशी से मैं पागल हो गया, मैंने कहा "भैया दिखाइये सिक्का कैसा है।" जब मैंने सिक्का देखा तो उस को देखकर मैं ख़ुशी से बाग-बाग हो गया।

मैंने विक्रम को सिक्का दिखलाते हुए कहा "देख यार, इसी सिक्के के लिए मैं कब से परेशान था और इसे ढूँढ रहा था। आज मिल गया"।

विक्रम ने मेरे हाथ से सिक्का लेकर देखा तो बोला "वाकई यार ये तो नायाब सिक्का है, भैया ऐसा एक सिक्का और है क्या?"

दुकानदार बोला "नहीं भैया, बड़ी मुश्किल और जतन से सिर्फ एक ही सिक्का मिल पाया है। मैं आपके लिए भी ढूँढ़ने की कोशिश करूंगा। "सुनकर विक्रम थोड़ा मायूस हो गया। मेरे पैसे ख़तम हो गए थे, मैंने विक्रम से पूछा "विक्रम तेरे पास कुछ रुपये हैं। मुझे दे दे मैं कल लौटा दूंगा।"

विक्रम बोला "नहीं यार, आज मेरे भी सारे पैसे ख़तम हो गए।"

मैंने दुकानदार से कहा "भैया आज मेरे पास पैसे नहीं हैं, मैं कल आपको पैसा दे दूँ तो।"

वो बोला "ठीक है भैया। आप पैसे ले आओ और सिक्का ले जाना।" इतना कह्कर उसने सिक्का वापस ले

लिया और अंदर गल्ले में रख दिया। हम दोनों वापस आ गए और अगले दिन मैंने अपनी माँ को मनुहार कर 50 रुपये ले लिए और साइकल तेजी से चलाकर दुकानदार के पास पहुँचा। मैंने उसे 50 का नोट देकर कहा " भैया, ये लो अपने पैसे और जल्दी से सिक्का मुझे दे दो।" दुकानदार आश्चर्य से मेरा मुँह देखने लगा और धीरे से बोला "पर भैया कल ही आपके जाने के थोड़ी देर बाद विक्रम भैया आये थे। उन्होंने मुझे कहा कि वो आपके पैसे लाये हैं सिक्का लेने के लिए, वो आपको दे देंगे और मुझसे सिक्का लेकर चले गए।" मुझे काटो तो खून नही, अचानक मुझे धरती गोल-गोल घूमने का अहसास होने लगा। इतना बड़ा धोखा, मेरे साथ विश्वासघात। ऐसा विक्रम ने क्यूँ किया, मुझे झूंठ क्यों बोला। मन में इन्ही घुमड़ते हुए झंझावातों के साथ मैं वापस घर आया। मैंने माँ से कुछ नहीं कहा और चुपचाप सो गया। शाम हो गई पर विक्रम मुझसे मिलने नहीं आया। रात भी हो गई।

माँ ने पूछा "बेटा, आज विक्रम नहीं आया।"

मैंने कहा "शायद तबीयत खराब होगी।"

दुसरे दिन सुबह मुझे विक्रम अपने घर से बाहर निकलते दिखा। मैं जैसे ही उसकी ओर आगे बड़ा उसने मुँह फेर लिया और दूसरी दिशा में चला गया। बस अब यही होता मेरा सबसे पक्का दोस्त मुझे देखकर पलट जाता और हम लोगों की बातचीत बंद हो गई। हम लोगों का मिलना बात करना बिना किसी झगड़े के बंद हो गया। धीरे-धीरे ये बीमारी हमारे परिवारों में भी स्थानांतरित हो गई। आपस में बोलचाल बिलकुल बंद हो गई बिना जाने कि इसकी वजह क्या है। मैं सदैव दुखी रहता, चाहकर भी विक्रम को भुला नहीं पाया और उसके जैसा कोई अन्य दोस्त नहीं बना पाया। दिन गुज़रते रहे, महीने गुज़र गए। हम दो दोस्त जो एक दूसरे के बिना रह नहीं पाते थे अब एक दूसरे का मुँह नहीं देखते थे मैं नाराज़गी में और विक्रम ग्लानि में।

फिर एक दिन होली का पर्व आया। होलिका दहन के समय हम दोनों ही एक स्थान पर खड़े थे पर न वो आगे बढ़ा न ही मैं, हम अपनी-अपनी अकड़ में पास रहकर भी दूर ही रहे। दूसरा दिन धुलेंडी का था। सुबह घर वालों से होली का टीका लगवाकर मैं घर से बाहर निकला ही था कि देखा कि मेरे दोस्तों की टोली रंग अबीर उड़ाते हुए मेरे घर की ओर ही चली आ रही हैं। माँ सबके लिए थाली में गुजिया, नमकीन और गुलाब जामुन लेकर आई और स्टूल पर रख दिया। दोस्तों ने आते ही हुडदंग मचाना शुरू किया मैंने देखा कि उनमें विक्रम भी था पर वो चुपचुप एक कोने में खड़ा था। मैंने सबको होली की शुभकामनाएँ देते हुए, माथे पर गुलाल लगा कर गले मिलना शुरू कर दिया। ऐसे ही चलते हुए अनायास मैं विक्रम के सामने पहुँच गया

और एकदम से रुक गया। सभी मुझे देखने लगे, विक्रम सर झुकाकर खड़ा था। अचानक न जाने मुझे क्या हुआ, मैंने उंगलियों में गुलाल लेकर विक्रम के माथे और गालों पर लगा दिया और उसे कसकर गले से लगा दिया। तभी मुझे महसूस हुआ कि मेरे कंधे गीले हो गए हैं। मेरे गले लगे हुए विक्रम की आँखों से आंसू वर्षा की पहली फुहार से झड़ रहे थे और मेरे सारे संतापों को धो रहे थे। मेरे भी नयनों में जैसे सैलाब आ गया और मैंने उसे कस कर गले लगा लिया। उसने भी मुझे बाँहों में भींच लिया। कुछ देर तक हम ऐसे ही खड़े रहे।

मैंने धीरे से विक्रम के कानों में बोला " विक्रम, आज मुझे रंग नहीं लगाएगा क्या"।

विक्रम को जैसे होश आया उसने गुलाल का मुठ्ठा भरा और मेरे चेहरे पर पोत दिया। सारे गिले शिकवे एक चुटकी भर गुलाब के चहरे पर लगने से दूर हो चुके थे। रंगों के इस पर्व में नाराज़गी और ग्लानि के भाव जो हम कई महीनों से पाले हुए थे, एक क्षण में हम दोनों से छूमंतर हो गए। हम एक दूसरे के बार-बार गले लग होली खेलने लगे और एक दूसरे को रंग लगाने लगे। हमें होली खेलते देख हमारे परिवार भी भौचक्का रह गए और मामला समझते ही वो लोग भी मिल-जुलकर होली खेलने लगे। शिशिर की जमी सारी ठंडी बर्फ, वसंत की एक फुहार और रंगीन गुलाब के लगने से पिघल गई और एक नया सवेरा हमारी दोस्ती में ले आई। बचपन की छोटी-सी ईर्ष्या से हुई एक गलती से जो बर्फ दोस्ती के बीच जमकर दोस्ती को गला रही थी वो अब पिघल गई इस होली के पर्व में। उसके बाद हमने कसम खाई कि कुछ भी हो इस तरह की गलतफहमी या कोई भी बात हमारी दोस्ती के बीच नहीं आएगी। हमने ये भी कसम खाई कि कुछ भी हो हम होली साथ ही मनाएँगे। और ऐसा पिछले 40-42 सालों से निरंतर चल रहा था। हमारी दोस्ती पहले से भी प्रगाढ़ हो गई थी। यादों के झुरमुट से वर्तमान में झाँकते हुए, मैं वापस आज में आया और विक्रम को देखा। विक्रम मुझे देख कर मुस्कुरा रहा था।

वो बोला " राजू, होली याद आई न" मैंने कहा हाँ और अपने सबसे प्यारे मित्र को गले लगा लिया।

मित्रों, होली एक ऐसा पर्व हैं जिसमें सारे गिले शिकवे दूर हो जाते हैं और दुश्मन भी दोस्त बन जाते हैं| मुझे गर्व है कि हमारी संस्कृति में ऐसा पर्व फागुन या होली है जो भाईचारा , दोस्ती और संबंधों को बढ़ाता है| *

सुर-सम्राज्ञी लता मंगेशकर

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ,
पीएसएमडी

भारतवर्ष के 140 करोड़ जनवृंद ने अपनी सबसे प्रसिद्ध आवाज़ को खो दिया जब 6 फरवरी, 2022 को सुर-सम्राज्ञी लता मंगेशकर सदा के लिए पारलौकिक रंगमंच की ओर प्रस्थान कर गईं। अपनी अदम्य प्रतिभा, सुरीली और सारगर्भित आवाज़ एवं अपनी आवाज़ की निरंतरता के कारण लता मंगेशकर एक नाम, एक संज्ञा से एक विशेषण बन गई तथा संगीत जगत में किसी भी आवाज़ की उत्कृष्टता एवं पवित्रता के लिए संदर्भ स्वरूप उनकी ही आवाज़ मानी गई। उनकी गायकी में एक ऐसा दैवीय सुर था जिससे उनके श्रोताओं का उनके गीतों के माध्यम से दैवीय साक्षात्कार हो जाता था। इन्हीं दैवी गुणों के कारण उनके प्रशंसकों में भी भक्ति भाव आ जाता था तथा वे भी देवत्व की राह में अपना अस्तित्व विलीन कर भक्त बन जाते थे।

1949 में 'महल' फिल्म के गाने *'आएगा, आएगा, आएगा आनेवाला'* से उन्हें पहली प्रसिद्धि मिली और उन्होंने उसके बाद संगीत जगत पर महारानी की तरह राज किया तथा हर उम्र के लोग उनके गीतों में अपने भाव महसूस करते थे। वस्तुतः लता मंगेशकर स्वर माधुर्य, संगीत लावण्य एवं संगीत की बहु-विज्ञता का पर्याय थीं।

लता मंगेशकर का जन्म 28 सितंबर, 1929 को इन्दौर में एक मध्यमवर्गीय, परंपरावादी मराठी परिवार में पंडित दीनानाथ मंगेशकर की सबसे बड़ी सुपुत्री के रूप में हुआ। हालाँकि, उनका बचपन महाराष्ट्र में बीता। संगीत में उनकी शिक्षा तब शुरू हुई जब वे अपने पिता के प्रशिक्षण सत्रों में चुपके से पहुँचकर सुनतीं और गाने का प्रयास करती थीं। उनकी प्रतिभा को देखकर पिताजी ने उन्हें संगीत का औपचारिक प्रशिक्षण 5-6 वर्ष की आयु में ही देना प्रारंभ कर दिया था।

परंतु, भाग्य को कुछ और ही मंज़ूर था। अलापावस्था में ही उन्होंने अपने पिता को खो दिया और तात्कालिक आर्थिक स्थिति के कारण अचानक ही उन्होंने अपने परिवार की आजीविका चलाने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया। इस कारण से शास्त्रीय गायिका बनने का उनका सपना पूरा नहीं हो सका, परंतु कोरोड़ों भारतीय एवं वैश्विक श्रोताओं के लिए यह वरदान साबित हुआ। संगीत उनकी ज़िंदगी एवं आजीविका बन गई और प्रारंभिक संघर्षों से उनमें जो अनुशासन तथा देख-भाल कर निर्णय लेने की अभूतपूर्व क्षमता आ गई, वह ज़िंदगी भर बनी रही।

शुरुआत में पैसों के लिए उन्होंने कई फिल्मों में छोटी-छोटी भूमिकाएँ कीं। परंतु *'आएगा, आएगा'* की सफलता एवं लोकप्रियता के कारण उन्होंने अपना ध्यान पार्श्वगायन पर केंद्रित कर लिया और अगले 6 दशकों में 20 भाषाओं में 30 हज़ार से अधिक गाने गाए।

पार्श्वगायन में उन्होंने एक-से बढ़कर एक संगीतकारों के साथ काम किया। उनकी सुरीली आवाज़ ने जहाँ सज्जाद हुस्सैन एवं नौशाद के शास्त्रीय गानों की शोभा बढ़ाई, वहीं सी रामचंद्र, रोशन एवं रवि जैसे संगीतकारों की लयात्मकता एवं सुरीलेपन को भी चार-चाँद लगाया। सलिल चौधरी एवं एस डी बर्मन के गानों के माध्यम से जहाँ उन्होंने मंद्र से तार सप्तक तक अपनी आवाज़ की परास को तलाशा तो मदन मोहन एवं खय्याम के गज़लों में अपनी आवाज़ के संतुलन एवं गहराई का प्रदर्शन किया। वहीं पर, शंकर-जयकिशन, कल्याणजी-आनंदजी, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल एवं आर डी बर्मन के संगीत निर्देशन में उन्होंने आम जनता के पसंदीदा संगीत का जादू बिखेरा। बाद में उसी तन्मयता से उन्होंने नए संगीतकारों, यथा आनंद-मिलिंद, जतिन-ललित, नदीम-श्रवण, ए आर रहमान आदि के निर्देशन में भी संगीत के नए आयामों को छुआ। सबसे बड़ी बात, गाने की परिस्थिति एवं मनोदशा तथा कलाकारों के व्यक्तित्व के अनुसार अपनी आवाज़ के उतार-चढ़ाव पर नियंत्रण एवं रंग तथा भाव का संयोजन उन गानों की गुणवत्ता को कई गुना बढ़ा देते थे। गीतकार

इसी प्रत्याशा में रहते थे कि कब और कैसे उनके गीत लताजी के होठों पर आकर दिव्य स्वरूप प्राप्त कर लें। एक और विशेषता कि उन्होंने संगीत में अपनी तरुणाई सदाबहार तरीके से बरकरार रखी। चाहे वह फिल्म 'गाइड' (1964) की *'आज फिर जीने की तमन्ना'* हो, चाहे *'मेरे ख्वाबों में जो आए'* (1995), हर दौर की नायिकाओं के मनोभावों को उन्होंने बखूबी अपना स्वर दिया।

काव्य शास्त्र में 9 रस – श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शांत – होते हैं। लताजी ने इन सभी रसों में शानदार गाने गाए हैं जो सदैव ही मानव-स्मृतियों में शेष रहेंगे। चाहे वे 'तन डोले मेरा मन डोले' का श्रृंगार रस हो अथवा 'ऐ मेरे वतन के लोगो' का वीररस हो, सबने क्षोताओं की आत्मा को छुआ है।

लताजी के मृदुल एवं सौम्य स्वभाव के अंदर एक दृढ़-प्रतिज्ञ व्यक्तित्व भी था। उन्होंने कलाकारों के अधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष किया। उस संघर्ष में उन्हें बड़े प्रसिद्ध नामों से भी लोहा लेना पड़ा, परंतु वह कभी झुकी नहीं, कभी रुकी नहीं और अपने ध्येय को प्राप्त कर ही दम लिया। इस संघर्ष से उन्होंने अपने संगीत की यात्रा को प्रभावित होने न दिया।

लता दीदी को पाकर पुरस्कार भी सम्मानित होते थे। राष्ट्र के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से उन्हें अलंकृत किया गया। उनके जीवनकाल में ही उनके नाम पर 'लता मंगेशकर सम्मान' की स्थापना की गई। वस्तुतः वे पुरस्कारों की लालसा के परे थीं।

लता दीदी की जादुई आवाज़ हमेशा के लिए भारत ही नहीं, विश्वभर के जन-मानस में रही है और रहेगी। पार्श्वगायन उनके बिना अधूरा दिखेगा। फिल्म 'किनारा' में गुलज़ार के बोलों को लता दीदी ने संभवतः स्वयं के लिए आवाज़ दी थी - *'मेरी आवाज़ ही पहचान है, गर याद रहे'*।

*

> आप कुछ देखते हैं; तो कहते हैं, "क्यों?", लेकिन मैं असंभव से सपने देखता हूँ और कहता हूँ, "क्यों नहीं?"
>
> **- जॉर्ज बर्नार्ड शॉ**

कुमारी पुष्प
वैज्ञा./इंजी.-एससी,
एनएफएसडी

फूल पत्ती

जीवन में कठिन परिस्थितियों को पैदा करने का अपना तरीका है जो हमें किसी भी तरह भावात्मक और मानसिक रूप से थका सकता है। हम अपने व्यक्तिगत जीवन में विभिन्न भूमिकाओं में सर्वश्रेष्ठ जीने के लिए, चाहे वह हमारे काम के माहौल में हो या हमारे परिवार में बेटी, बेटे, माँ, पत्नी, पिता या पति के रूप में हो, यह उचित है कि हम ध्यान रखें हमारे अपने भावनात्मक और मानसिक कल्याण का, संक्षेप में कहें तो दूसरों की देखभाल करने से पहले खुद का, ख्याल रखना ज़रूरी है। वर्तमान समय में, कोरोना संकट के कारण, हमारे शारीरिक, मानसिक और भावात्मक स्वास्थ्य का समग्र रूप से ध्यान रखना और भी महत्वपूर्ण हो गया है ताकि हम एक समाज के रूप में इस कठिन समय से बचकर विकसित हो सकें। अपने आंतरिक कल्याण के उत्थान के लिए और प्रवाह की सुंदर लय का अनुभव करने के लिए विभिन्न लोग विभिन्न माध्यमों का उपयोग करते हैं। कुछ लोग ड्राइंग, पेंटिंग, दृश्य कला के माध्यम से सृजन में शांति पाते हैं, अन्य लोग शारीरिक फिटनेस गतिविधियाँ, जैसे दौड़ना, योग में अपना आराम पाते हैं। कुछ अन्य गतिविधियां, जो लोग अपनी आंतरिक शांति पाने के लिए प्रयोग करते हैं, वे हैं आध्यात्म, बागवानी, खाना बनाना, संगीत सुनना और बनाना, लिखना या पढ़ना। उन क्षमताओं को देखते हुए जिनके साथ मनुष्य को ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त है, रचनात्मक कार्य स्वयं और दूसरों के जीवन में सुंदरता जोड़ते हैं।

बागवानी न केवल प्रभावी ढंग से अपना समय बिताने का एक बहुत ही सुंदर साधन है, बल्कि पर्यावरण की प्राकृतिक सुंदरता को भी बढ़ाता है। बागवानी कई प्रकार की हो सकती है, जलीय पौधे लगाना या सब्जियां, फल या फूल वाले पौधे लगाना। प्रत्येक का अपना आनंद और लाभ है। अंतिम आनंद पौधों की देखभाल करने वाले को होता है जब वे देखते हैं कि पहली कली एक पौधे से फूल के रूप में खिलती है, या जब सावधानी से लगाए गए बीज पहली पत्ती के लिए मिट्टी से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करते हैं।

वैसे मैं पंजाब से ताल्लुक रखती हूँ जिसे 'भारत का अन्न भंडार' कहा जाता है। जैसा कि नाम से पता चलता है, पंजाब अपनी खेती के लिए जाना जाता है। सबसे अधिक उगाई जाने वाली फसल गेहूँ है। चावल, कपास, गन्ना, बाजरा, ज्वार, मक्का, जौ और फल यहाँ उगाई जाने वाली अन्य महत्वपूर्ण फसलें हैं। चारे की फसलों में बाजरा और ज्वार यहां बहुतायत में उगाए जाते हैं। फलों की श्रेणी में यह किन्नू के प्रचुर भंडार का उत्पादन करता है। ये बात हुई पंजाब की। लेकिन पिछले तीन सालों से जब से मैं 'भगवान के अपने देश-केरल' में रह रही हूँ, इसकी सुंदरता और हरियाली ने मेरे दिल को कई तरह से छुआ है। मैंने केरल के लोगों में बागवानी के प्रति एक असामान्य स्तर का उत्साह और प्रेम देखा है। कोई आश्चर्य नहीं, चाहे आप इस खूबसूरत राज्य की पहाड़ी गलियों से गुज़र रहे हों, या समुद्र तट के किनारे, या यहां तक कि शहर की पतली सड़कों की भूलभुलैया में, आपके होश निश्चित रूप से सुंदर और रंगीन फूलों और सुगंधों से भरे रहेंगे।

मुझे खुद फूल वाले पौधों का विशेष शौक रहा है। न केवल इसलिए कि वह मेरे अपने नाम का पर्याय है, बल्कि इसलिए भी कि यह मुझे आश्चर्यचकित करता है कि कैसे एक फूल धूप की कृपा में निस्वार्थ भाव से खिलता है और अपनी सुगंध और सुंदरता को पर्यावरण में फैलाता है, और फिर चुपचाप इस्तीफा दे देता है शाम के सूरज में ही, फिर से खिलने के लिए। यह कुदरत का कमाल है। कैसे भगवान ने अलग-अलग आकार में फूल बनाए हैं, और अलग-अलग रंग छिड़के हैं और हर तरह के सुगंध से धोए हैं। अब आप ही बताएं, क्या फूलों से प्यार न करने का कोई कारण है? ये फूल सुबह जल्दी खिलते हैं और आपकी सुबह को रोशन करने के लिए हवा को सुगंधित बनाते हैं और जब आप एक लंबे और व्यस्त दिन के बाद लौट रहे हों तो पेड़ों से फूल झड़ते हैं और एक सुंदर दृश्य बनाने के लिए आपकी सड़कों को रंग देते हैं। हर फूल की अपनी एक पहचान होती है और वह अपना ही गीत गुनगुनाता है। ठीक ऐसे जैसे एक शुद्ध सफेद चमेली, किसी मंदिर में भगवान को समर्पण करके या किसी साधारण महिला की चोटी में बैठकर कहानी सुनाती है। या एक लाल गुलाब, जो अपनी सुंदरता में खिलता है और इसकी प्रत्येक पंखुड़ी आनंद और शांति का प्रतीक है।

पौधों और फूलों की सुंदरता के इस परस्पर क्रिया ने बागवानी के लिए मेरे प्यार को जन्म दिया, और मुझे इसके बारे में लिखने के लिए प्रेरित किया, और इसलिए मुझे एक लेखक और यहां तक कि एक फोटोग्राफर भी बना दिया। मुझे लगता है कि मैंने इस बारे में पर्याप्त बात की है कि मुझे पौधे कितने प्रेरक और सुंदर लगते हैं। इसलिए मैं कुछ तस्वीरों के साथ संलग्न कर रही हूँ, जहाँ मैंने प्रकृति के अजूबों की विशाल सुंदरता को थोड़ा-सा कैद करने का प्रयास किया है। *

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022

8 मार्च, 2022 को आईआईएसयू के साथ मिलकर वीएसएससी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (आईडब्ल्यूडी 2022) मनाया गया। आईडब्ल्यूडी 2022 समारोहों के हिस्से के रूप में आउटडोर गतिविधि समिति द्वारा आईआईएसयू/सीएमएसई के कैंपसों में 2 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। वे थे सेवानिवृत्त कर्मचारियों द्वारा पौधे लगाना और फ्लैश मोब।

सीएमजी दल के समर्थन से आईआईएसयू/सीएमएसई कैंपसों में 03 मार्च, 2022 को पौधे लगाने हेतु एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मार्च 2022 से मार्च 2023 तक अधिवर्षिता प्राप्त करनेवाले आईआईएसयू/सीएमएसई के कर्मचारियों ने भाग लिया। डॉ. साम दयाल देव, निदेशक, आईआईएसयू द्वारा एक पौधे लगाकर इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया और सेवानिवृत्त हो रहे 15 कर्मचारी इस अवसर पर उपस्थित रहे। श्री के एस मणि, सह-निदेशक, आईआईएसयू, श्री प्रेमदास एम, उप निदेशक, सीएमएसई तथा श्रीमती आनी फिलिप, अध्यक्षा, आईडब्ल्यूडी 2022 ने इस समारोह की शोभा बढ़ाई।

आईडब्ल्यूडी 2022 समारोह के हिस्से के रूप में 07 मार्च, 2022 को 2.30 बजे अपराह्न आईआईएसयू में फ्लैश मोब का आयोजन किया गया। आईआईएसयू के मुख्य भवन के सामने यह आयोजित हुआ। आईडब्ल्यूडी 2022 का विषय "पूर्वाग्रह को तोड़ो" का प्रचार करने हेतु इसका आयोजन किया गया था। आईआईएसयू की महिला कर्मचारियों का प्रदर्शन सुंदर एवं शानदार रहा। उनके प्रदर्शन का रसास्वादन करने तथा तालियों से हौसला बढ़ाने के लिए आईआईएसयू, सीएमएसई एन्टिटियों और आईआईएसयू/सीएमएसई प्रशासन के कर्मचारी एकत्र हुए थे। इस कार्यक्रम को देखनेवालों में डॉ. साम दयाल देव, निदेशक, आईआईएसयू तथा श्री के एस मणि, सह-निदेशक, आईआईएसयू भी शामिल रहे।

*

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022 - आउटडोर गतिविधि

अंतरांष्ट्रीय महिला दिवस
International Women's Day
मार्च/March 2022

कथक के पुरोधा बिरजू महाराज

श्रीमती राखी सिंह
(पत्नी, श्री प्रियदर्शन, वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी)

एवं

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी

भारत के सबसे बड़े कलाकारों में से एक एवं कथक नृत्य के पुरोधा पं. बिरजू महाराज का 17 जनवरी, 2022 को 84 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। महाराज के नाम से लोकप्रिय पं. बिरजू महाराज ने अपनी पूरी ज़िंदगी निरंतर संगीत एवं नृत्य को पूणता से जीने में लगा दिया। सिर्फ कथक नृत्य ही नहीं, महाराज जी को उससे जुड़ी संपूर्ण संस्कृति से प्रेम था तथा वे कथक के साथ-साथ शास्त्रीय गायन, तबला, हारमोनियम तथा पखावज में भी बखूबी निपुण थे। महा राज जी के लिए कथक सिर्फ परन और चक्कर तक सीमित नहीं था, वरन् उनके लिए पूरा रंगमंच एक कैनवास की तरह था, जिसपर वे कृष्ण एवं राधा के अलौकिक प्रेम के विभिन्न चित्र उकेरते रहते थे तथा नित नई रचनाओं से दर्शकों को भाव-विभोर करते रहते थे।

महाराज जी एक कवि-हृदय थे, दर्शकों से संवाद की कला में माहिर थे तथा अपनी प्रस्तुतियों में जीवन के सूक्ष्म पहलुओं का वर्णन करते रहते थे, जिससे न सिर्फ नृत्य-संगीत के विद्वान भी प्रभावित होते थे,

अपितु आम दर्शकों के मन-मयूर भी नाच उठते थे। इसके बावजूद उनमें अभिमान का लेश मात्र भी नहीं था तथा वे अपनी प्रसिद्धि एवं सम्मान को दैवी कृपा का प्रसाद एवं दर्शकों के प्यार का फल ही मानते थे।

पं. बिरजू महाराज लखनऊ घराने के कालका बिंदादीन की सातवीं पीढ़ी के कलाकार थे। उनके नृत्य में लखनऊ की प्रसिद्ध नफासत, लालित्य एवं सुंदरता भरी हुई थी। उनके पूर्वज इलाहाबाद के समीप एक छोटे-से कस्बे हांडिया से आते थे। इनके पूर्वज अवध एवं रामपुर के दरबार में प्रदर्शन किया करते थे।

पं. बिरजू महाराज का जन्म 4 फरवरी, 1938 को कथक के प्रसिद्ध कलाकार जगन्नाथ महाराज उर्फ अच्छन महाराज के घर हुआ था। मूलतः उनका नाम बृजमोहन मिश्र रखा गया था, जो बाद में बिरजू महाराज के तौर पर बदल गया। नृत्य की शुरुआती शिक्षा पिता के अलावा उनके चाचाओं, लच्छू महाराज और शंभु महाराज से मिली। 9 वर्ष की आयु में पिता को खोने के बाद वे अपने परिवार के साथ दिल्ली आकर रहने लगे। मात्र 13 वर्ष की आयु में ही उन्होंने नई दिल्ली के संगीत भारती में नृत्य प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। उसके बाद उन्होंने भारतीय कला केंद्र एवं कथक केंद्र में प्रशिक्षण दिया। कथक केंद्र संगीत नाटक अकादमी की एक इकाई है जहां पर महाराज जी संकाय के अध्यक्ष थे तथा निदेशक भी रहे। 1998 में उन्हें वहां से सेवानिवृत्ति मिली।

सदैव विनम्र, सदैव सकारात्मक, बिरजू महाराज का मानना था कि कथक नर्तक वस्तुतः कथाकार है तथा उन्हें अपने समय की कथा को प्रस्तुत करना चाहिए। वे छोटी-से-छोटी चीज़ों में लय-ताल ढूंढ़ लेते थे और उसको अपनी दिव्य प्रस्तुति का आधार बना लेते थे।

उन्होंने फिल्म कलाकारों, यथा सत्यजीत राय, संजय लीला बंसाली एवं कमल हासन के साथ मिलकर काम किया और कथक को लोकप्रिय बनाए रखने का प्रयास किया। उनका मानना था कि सिनेमा शास्त्रीय कलाओं को लोगों तक पहुंचाने एवं लोकप्रिय बनाने का एक सशक्त माध्यम है। 1990 में माधुरी दीक्षित के साथ किए गए उनके कार्य ने कथक को युवा वर्ग में खास लोकप्रिय बना दिया।

उन्होंने दिल्ली में कलाश्रम नामक एक नाट्य विद्यालय शुरू किया जहां प्रशिक्षण के द्वारा उन्होंने न सिर्फ चमकते सितारे पैदा किए वरन् सैकड़ों नर्तकों की आजीविका का साधन तलाशने में भी मदद की।

महाराज जी को अपने उत्कृष्ट कला-कौशल के लिए अनगिनत सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए जिनमें पद्म विभूषण (1986), संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, कालिदास सम्मान लता मंगेश्कर सम्मान (2002), भरत मुनि सम्मान इत्यादि प्रमुख हैं। फिल्म विश्वरूपम के लिए उन्होंने 2012 में सर्वश्रेष्ठ नृत्य निर्देशन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त किया एवं 2016 में फिल्म बाजीराव मस्तानी के *मोहे रंग दो लाल* गाने पर नृत्य-निर्देशन के लिए फिल्म फेयर पुरस्कार भी प्राप्त किया।

पं. बिरजू महाराज अपनी सादगी, अदम्य कला-कौशल एवं कथक को लोकप्रिय बनाने के लिए उनके अनवरत प्रयासों के लिए सदैव याद किए जाते रहेंगे। *

अपने विरोधियों से मित्रता कर लेना क्या
विरोधियों को नष्ट करने के समान नहीं है?

- अब्राहम लिंकन

चुटकुले

पत्नी : शादी से पहले तुम मुझे होटल, सिनेमा, और न जाने कहां- कहां घुमाते थे शादी हुई तो घर के बाहर भी नहीं ले जाते..
पति : क्या तुमने कभी किसी को चुनाव के बाद प्रचार करते देखा है..।

लड़की अपने ब्वॉयफ्रेंड को अपनी मम्मी से मिलवाने ले गई... दूसरे दिन..
गर्लफ्रेंड : मेरी मम्मी को तुम बहुत पसंद आए।
ब्वॉयफ्रेंड : चल पगली....कुछ भी हो....
मैं शादी तो तुमसे ही करूंगा....
मम्मी से बोलना मुझे भूल जाएं....।

पप्पू : मां ये लड़कियां इतने व्रत क्यों रखती हैं...?
मां : बेटा इतनी आसानी से थोड़ी मिल जाएगा किसी को तू...!
पप्पू (मन ही मन सोचता हुआ) बोला- कसम से आज पहली बार देवता वाली फीलिंग आ रही है...!

बंटू : वेटर, ऐसी चाय पिलाओ जिसे पीकर मन झूम उठे और बदन नाचने लगे
वेटर : सर हमारे यहां भैंस का दूध आता है, नागिन का नहीं।

संता (मेहमान से) : ठंडा लोगे या गरम?
मेहमान : दोनों ले आओ...
संता : प्रीतो.. एक गिलास फ्रीजर से और दूसरा गिलास गीजर से पानी ले आओ..।

राजू की पत्नी बादाम खा रही थी... राजू रोमांटिक होते हुए बोला- जरा मुझे भी टेस्ट कराओ... पत्नी ने एक बादाम उसके हाथ में रख दिया और बाकी खुद खाने लगी।
राजू : बस एक ही?
पत्नी ने झल्लाकर कहा- हां, बाकी सबका टेस्ट भी ऐसा ही है..।

महिला : मुझे मेरे पूर्व पति से फिर से शादी करनी है।
वकील : अभी आठ दिन पहले ही तो आपका तलाक़ करवाया है।
फिर क्यों!!
महिला : वो तलाक़ के बाद बहुत खुश दिख रहे हैं और मैं ये बर्दाश्त नहीं कर सकती।

जज : तुमने हवलदार की जेब में माचिस क्यों जलाई?
रमेश : सर, हवालदार साहब ने कहा था, जमानत चाहिए, तो जेब गर्म कर, मैंने माचिस जला दी।

पत्नी : चल तो रहे हो, मायके, लड़ना मत वो मेरे पापा का घर है।
पति (झुंझलाकर) : तो मेरे पापा का घर क्या कुरुक्षेत्र है, जो रोज यहां महाभारत करती हो।

संजू : पंडित जी, किसी सुंदर लड़की का हाथ पाने के लिए क्या करूं?
पंडित जी : किसी मॉल के बाहर मेहंदी लगाने का काम शुरू कर दे।

हिंदी कार्यशाला: अक्तूबर-दिसंबर 2021 तिमाही

कोविड-19 महामारी को मद्देनज़र रखते हुए प्रचलित दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करते हुए भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2021 की अक्तूबर-दिसंबर तिमाही के दौरान आईआईएसयू तथा सीएमएसई के प्रशासनिक क्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दिनांक 12 नवंबर, 2021 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कुल 27 प्रतिभागी उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र में श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.), वीकेसी ने अध्यक्ष महोदय श्री एस शिवसुब्रह्मणि, उप निदेशक, एमआईएसए तथा संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्री ए सोमदत्तन, भूतपूर्व सहायक निदेशक (रा.भा.), आयकर विभाग एवं सभी प्रतिभागियों का कार्यशाला में स्वागत किया। तदुपरांत उन्होंने अध्यक्ष महोदय से कार्यशाला का औपचारिक तौर पर उद्घाटन करने का अनुरोध किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि दैनंदिन कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग करना, सरकारी कर्मचारी होने के नाते हमारा कर्तव्य है। साथ ही उन्होंने राजभाषा विभाग की पत्रिकाओं के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना 2019-2020 के तहत "ग" क्षेत्र की सर्वोत्तम हिंदी पत्रिका के रूप में वीकेसी की हिंदी पत्रिका **"अक्ष"** को प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने पर तथा राजभाषा विभाग के **क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार योजना** के तहत वर्ष 2019-2020 के दौरान राजभाषा के उत्तम कार्य निष्पादन के लिए दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के केंद्र सरकारी कार्यालयों की श्रेणी में **द्वितीय पुरस्कार** के लिए आईआईएसयू का चयन किए जाने पर अपना संतोष व्यक्त किया। इन उपलब्धियों को हासिल करने में सहयोग और समर्थन प्रदान करने के लिए सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया और विशेषकर अपने कुशल नेतृत्व एवं अथक प्रयास से वीकेसी को इन उपलब्धियों के लिए सक्षम बनाने हेतु श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा, सहायक निदेशक (रा.भा) की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने आगे भी यह स्तर बनाए रखने के लिए सभी का सहयोग और समर्थन का अनुरोध किया।

दो सत्रों में कार्यशाला का आयोजन किया गया था। पहला सत्र श्री ए सोमदत्तन जी द्वारा राजभाषा नीति के मुख्य बातों तथा पत्राचार के विविध रूपों पर था। उन्होंने भारत सरकार की राजभाषा नीति से संबंधित मुख्य बातों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यशाला के दूसरे सत्र के दौरान वीएसएससी के उप निदेशक (रा.भा.) श्री एम जी सोम शेखरन नायर ने 'टिप्पण व आलेखन' तथा 'कंप्यूटर पर हिंदी के प्रयोग' पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने प्रशासनिक शब्दावली एवं वाक्यांशों एवं नेमी टिप्पणियों का अभ्यास भी कराया। सत्रांत में सभी प्रतिभागियों से लिखित रूप में कार्यशाला से संबंधित सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ संग्रहीत की गईं। सभी प्रतिभागियों ने कार्यशाला के आयोजन पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की और प्रतिभागियों की प्रतिनिधि के रूप में श्रीमती षीजा जोई एवं श्री अनीश ने संकाय सदस्यों एवं कार्यशाला के आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त किया। सहायक निदेशक (रा.भा.), वी.के.सी. के द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई। *

विश्व हिंदी दिवस समारोह - 2022

प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिंदी को प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी वीकेसी (आईआईएसयू तथा सीएमएसई) में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया।

दिसंबर, 2021 में श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा की पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति के बाद सहायक निदेशक (रा.भा) के पद पर नियुक्ति 10 जनवरी के बाद होने के कारण फरवरी महीने के दौरान ही यूनिट में विश्व हिंदी दिवस के सिलसिले में प्रतियोगिताओं का आयोजन हो पाया। आईआईएसयू तथा सीएमएसई के हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए अलग-अलग रूप से हिंदी निबंध लेखन, कहानी लेखन तथा इसके अलावा हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए संयुक्त रूप से तकनीकी लेख प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

कोविड–19 महामारी के कारण अब तक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन नहीं किया जा सका है। विश्व हिंदी दिवस समारोह के दौरान आयोजित उपर्युक्त प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों को नकद पुरस्कार, संबंधित कर्मचारियों के बैंक खातों में जमा किए गए हैं। इससे संबंधित प्रमाणपत्र अप्रैल में वितरित किए जाएंगे। *

> मैं हिंसा पर आपत्ति उठाता हूँ क्योंकि जब लगता है कि इसमें कोई भलाई है, तो ऐसी भलाई अस्थाई होती है; लेकिन इससे जो हानि होती है वह स्थाई होती है।
>
> **- मोहनदास करमचंद गांधी**

हिंदी कार्यशाला जनवरी- मार्च, 2022 तिमाही

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2022, जनवरी-मार्च तिमाही के लिए 03 मार्च, 2022 को आईआईएसयू तथा सीएमएसई के तकनीकी क्षेत्र के तकनीशियन बी एवं ड्राफ्ट्समैन के लिए एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें आईआईएसयू और सीएमएसई के विभिन्न अनुभागों से नामांकित किए गए 24 कार्मिकों ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में श्रीमती लक्ष्मी जी, सहा.निदेशक (रा. भा) (तदर्थ), वीएसएससी ने अध्यक्ष महोदय श्री राजीव सिन्हा, ग्रुप निदेशक, एमडीपीजी, संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्री ए सोमदत्तन, भूतपूर्व सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। तदुपरांत अध्यक्ष महोदय श्री राजीव सिन्हा, ने कार्यशाला का औपचारिक तौर पर उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन की आवश्यकताओं पर बल देते हुए कहा कि हमें हिंदी में किए जाने वाले सरकारी कामकाज का निष्पादन संवैधानिक दायित्व की तरह करना चाहिए और यह प्रयास करना चाहिए कि ऐसी कार्यशालाओं से लाभान्वित होते हुए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को अवश्य प्राप्त करें।

कार्यशाला सत्रों का संचालन करने के लिए आमंत्रित श्री ए सोमदत्तन, भूतपूर्व सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग, ने प्रथम सत्र के दौरान बोल चाल की हिंदी पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया और सत्रों से संबंधित अध्ययन सामग्रियाँ भी दी गईं। दोपहर द्वितीय सत्र में श्री शिवसुब्रह्मणि एस, उप निदेशक एमआईएसए ने संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्रीमती लक्ष्मी जी, सहा.निदेशक (रा.भा) (तदर्थ), का स्वागत किया। उन्होंने राजभाषा नीति की मुख्य बातों पर विस्तृत जानकारी दी। सत्रांत में प्रतिभागी गोविंद जी नायर ने सभी प्रतिभागियों की ओर से कार्यशाला के आयोजन पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की और संकाय सदस्यों एवं कार्यशाला के आयोजकों के प्रति आभार प्रकट किया। श्रीमती लक्ष्मी जी, सहा.निदेशक. (रा.भा), द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई। *

विश्व हिंदी दिवस-2022 के विजेताओं की सूची

1. श्री प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी, एआईएस

निबंध लेखन	प्रथम
कहानी लेखन	प्रथम
तकनीकी लेखन	प्रथम

2. श्री प्रेम प्रकाश
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए

निबंध लेखन	द्वितीय
कहानी लेखन	द्वितीय
तकनीकी लेखन	सांत्वना

3. श्री निशंक कुमार
वैज्ञा/इंजी-एसजी, एसआईएस

निबंध लेखन	तृतीय
कहानी लेखन	तृतीय

4. श्री शिवम शर्मा
वैज्ञा/इंजी-एससी, बीएसटीजी

कहानी लेखन	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना

5. श्री रोहित गुप्ता
वैज्ञा/इंजी-एससी, एआईएस

निबंध लेखन	सांत्वना

6. श्रीमती अंशु पाठक
वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए

कहानी लेखन	द्वितीय

7. श्रीमती अर्चना वासुदेवन
वरिष्ठ सहायक, आईआईएसयू लेखा

निबंध लेखन	प्रथम

8. श्री शौभिक घोष
वैज्ञा/इंजी-एससी, एलवीआईएस

निबंध लेखन	द्वितीय

9. श्रीमती सोनी मोहन
वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए

कहानी लेखन	द्वितीय
निबंध लेखन	तृतीय

10. श्री वैष्णव एम एस
वैज्ञा/इंजी-एससी, सीएमएसई

निबंध लेखन	तृतीय
कहानी लेखन	सांत्वना
तकनीकी लेखन	सांत्वना

11. श्रीमती लेनिना एम एस
तकनीकी अधिकारी-डी, एसआईएस

कहानी लेखन	प्रथम
निबंध लेखन	सांत्वना

12. श्री नवीन जी पाई
वैज्ञा/इंजी-एसजी, बीएसटीजी

तकनीकी लेखन	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना

13. श्री प्रकाश वी पी
वरिष्ठ सहायक, सीएमएसई भंडार

कहानी लेखन	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना

14. श्रीमती दीपा सारा जोण
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एलवीआईएस

तकनीकी लेखन	द्वितीय

सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाइयाँ !

उपलब्धियाँ

उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार

वर्ष 2019-2020 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट निष्पादन के लिए दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के 50 से अधिक कर्मचारियों वाले केंद्र सरकार कार्यालयों की श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार हेतु चयनित आईआईएसयू का पुरस्कार 04 दिसंबर, 2021 को हैदराबाद में आयोजित समारोह में श्री एस शिवसुब्रह्मणि, उप निदेशक, एमआईएसए तथा श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा, उप निदेशक (रा.भा.) वीएसएससी द्वारा ग्रहण किया गया।

राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), तिरुवनंतपुरम द्वारा वर्ष 2021-22 के दौरान राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु श्रेणी-1 (50 से अधिक कार्मिकों वाले कार्यालय) में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इन पुरस्कारों को 25 मार्च, 2022 को अपराह्न 03.00 बजे मुख्य पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय तिरुवनंतपुरम के सम्मेलन कक्ष "प्रगति" में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान श्रीमती शिउली बर्मन, मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल के कर-कमलों द्वारा वितरित किया गया और श्री के एस मणि, सह निदेशक, आईआईएसयू द्वारा ग्रहण किया गया।

उत्कृष्ट हिंदी गृह-पत्रिका के लिए पुरस्कार

वर्ष 2020-21 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), तिरुवनंतपुरम के सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं में से इस कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'अक्ष' को सर्वोत्तम पत्रिका के रूप में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

'अक्ष' में प्रकाशित लेखों के लिए पुरस्कार

'अक्ष' के पिछले अंक (अप्रैल 2021- सितंबर 2021) में प्रकाशित निम्नलिखित रचनाओं के लेखकों को नकद-पुरस्कार प्रदान किए गए :

वो भी तो एक बेटी ही होती है

श्री राजीव सिन्हा
ग्रुप निदेशक, एमडीपीजी

इलाहाबादी मतवाला

श्री सर्वेश कुमार सिंह
तकनीकी अधिकारी-सी, बीएसटीजी

योग दर्शन

श्री शशिकुमार के के
वैज्ञा/इंजी-एससी, एलवीआईएस

श्री शौभिक घोष
वैज्ञा/इंजी-एससी, एलवीआईएस

एलपीएससी से नई सामग्री की प्राप्ति

श्री मनौवर अन्सारी
वैज्ञा/इंजी-एससी, आईएसएमपी

आपके जीवन में सफलता का मापदंड क्या है?

श्री दीपू कुमार
वैज्ञा/इंजी-एसई, सीसीडीडी, सीएमएसई

राजभाषा प्रश्नोत्तरी, आप जानते हैं? एवं ग्रीक व लैटिन पदबन्ध

श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा
पूर्व उप निदेशक (रा.भा), वीकेसी

अन्य पुरस्कार

हिंदी में सराहनीय कार्य कर रहे कार्मिकों के लिए विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2021-22

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), तिरुवनंतपुरम के सदस्य कार्यालयों में हिंदी में सराहनीय कार्य कर रहे कार्मिकों के लिए प्रारंभ की गई विशेष प्रोत्साहन योजना के तहत इस कार्यालय के **श्रीमती आशा ए एस, वरिष्ठ सहायक, पीजीए, वीकेसी** को नकद पुरस्कार प्राप्त हुआ।

राजभाषा पर्व 2022 के सिलसिले में चलाई गई प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त कार्मिक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), तिरुवनंतपुरम के तत्वावधान में आयोजित राजभाषा पर्व-2022 के दौरान सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी में विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थीं। प्रतियोगिताओं में वीकेसी के निम्नलिखित प्रतिभागियों ने निम्नानुसार पुरस्कार जीते हैं :

कविता पाठ
प्रथम

अंशु पाठक
वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए

निबंध लेखन
प्रथम

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एआईएस

तस्वीर क्या बोलती है?
द्वितीय

सर्वेशकुमार सिंह
तकनीकी अधिकारी-सी, बीएसटीजी

टिप्पण एवं आलेखन
द्वितीय

आशा ए एस
वरिष्ठ सहायक, पीजीए, वीकेसी

सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाइयाँ

पाठकों की ओर से

दिनांक 21.12.2021 को आपके द्वारा भेजी गई हिंदी गृह पत्रिका 'अक्ष" के 10वें अंक की ई-पत्रिका इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पठनीय, संग्रहणीय तथा सूचनाप्रद हैं। पत्रिका की साज-सज्जा मनमोहक है। 'अक्ष' के सभी रचनाकारों तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. विजयशेखर
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

वीकेसी की हिंदी गृह पत्रिका'अक्ष'के 10 वें अंक का प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में मेल द्वारा प्रेषित लिंक प्राप्त कर लिया गया है।

एम. श्रीनिवास गुप्ता
सहायक निदेशक (राजभाषा)
राष्ट्रीय वायुमंडलीय अनुसंधान प्रयोगशाला, गादंकी - 517 112

आपकी गृह पत्रिका अक्ष का डिजिटल अंक प्राप्त हुआ है। पत्रिका के समय से प्रकाशन के लिए बहुत बहुत बधाई !

डॉ. शंकर कुमार
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
अंतरिक्ष विभाग, शाखा सचिवालय, नई दिल्ली

डियर मैडम, आपके द्वारा भेजी गई अक्ष के दसवें अंक की लिंक प्राप्त हुई।

डीनू रानी जी
उप निदेशक (राजभाषा)
समानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र (एच.एस.एफ.सी.), बैंगलूरु

न.रा.का.स. पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

सुख

हिंदी अनुभाग, वीकेसी द्वारा प्रकाशित; मेसर्स भानु ऑफसेट, तंपानूर, तिरुवनंतपुरम में मुद्रित